127. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 72nd Death Anniversary of great freedom fighter Yusuf Mehar Ali on 02.07.2022 and delivered keynote address on "Role of Yusuf Mehar Ali in Freedom Struggle of India".

दैनिक भास्कर झज्जर भास्कर 03-07-2022

युसुफ मेहर की 72वीं पुण्यतिथि पर विद्यार्थियों को किया जागरूक

आजादी का अमृत महोत्सव शृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में हुआ कार्यक्रम

भास्कर न्यूज | झज्जर

आजादी का अमृत महोत्सव शृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में 122वां कार्यक्रम महाविद्यालय प्राचार्या डॉ. अनीता फोगाट की अध्यक्षता में महान स्वतंत्रता सेनानी युसुफ मेहर अली की 72वीं पुण्यतिथि के अवसर पर आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप ने कहा कि युसुफ मेहर अली ने अंग्रेजी साम्राज्य के खिलाफ 'भारत छोड़ों' का नारा बुलंद किया था। 1903 में एक संभ्रांत परिवार में जन्म लेने वाले युसुफ युवावस्था से ही आजादी के आन्दोलन में कूद पड़े थे। पढ़ाई के दौरान उन्होंने बम्बई में छात्र हितों के लिए जोरदार आवाज उठाई। 3 फरवरी 1928 की रात में बंबई के मोल बंदरगाह पर पानी के जहाज से साइमन कमीशन के सदस्य उतरे। तभी समाजवादी नौजवान युसुफ मेहर अली ने नारा लगाया 'साइमन गो बैक' का नारा दिया। इसके बाद इन पर लाठियां बरसाई गई और गिरफ्तार किया गया। 1930 के दांडी मार्च में भी इन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई परन्तु इन्हें फिर से गिरफ्तार कर लिया गया और 4 महीने की कठोर कारावास की सजा सुनाई गई। भूगोल प्राध्यापक पवन कुमार ने कहा कि 1942 में जब युसुफ लाहौर की जेल में थे तब इनको बॉम्बे मेयर चुनाव के लिए मनोनीत किया गया। चुनाव में भाग लेने के लिए युसुफ को रिहा किया गया और इन्होंने बड़ी आसानी से बॉम्बे नगरपालिका का चुनाव जीत लिया। बम्बई का मेयर रहते हुए उन्होंने ब्रिटिश सरकार के खिलाफ आवाज उठाई एवं स्वतंत्रता के लिए भारत के अंतिम राष्ट्रव्यापी अभियान के लिए उन्होंने 'भारत छोड़ो' नारा दिया था। कार्यक्रम के सहसंयोजक इतिहास प्राध्यापक सवीन ने कहा कि इस आन्दोलन ने यह दिखा दिया कि अब आजादी भारत के कदमों से दूर नहीं है और अंग्रेजों को भारत को स्वाधीन करना ही पड़ेगा। 2 जुलाई 1950 को युसुफ मेहर अली का 47 साल की अल्पायु में निधन हो गया। इस अवसर पर सवीन, पवन कुमार सहायक प्रोफेसर उपस्थित रहे।

छात्रों को संबोधित करते हुए आयोजक।

128. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 125th Birth Anniversary of great freedom fighter and revolutionary Alluri Sitaram Raju on 04.07.2022 and delivered keynote address on "Rampa Revolt and Contribution of Alluri Sitaram Raju".

अमर उजाला, झज्जर
05.07.2022

'रम्पा विद्रोह के प्रमुख नायक थे अल्लूरी सीताराम राजू'

राजकीय महाविद्यालय में व्याख्यान देते वक्ता। संवाद

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में क्रांतिकारी एवं स्वतंत्रता सेनानी अल्लूरी सीताराम राजू के 125 वें जन्मदिवस के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया।

महाविद्यालय प्राचार्या डॉ अनीता फोगाट की अध्यक्षता में आयोजित कार्यक्रम के संयोजक

एवं मुख्य वक्ता डॉ अमरदीप ने कहा कि अल्लूरी सीताराम राजू ने रम्पा विद्रोह के दौरान अंग्रेजी हुकुमत को हिलाकर रख दिया था। देश की आजादी के लिए संघर्ष करने और कुर्बान होने वाले स्वतंत्रता सेनानियों में अल्लूरी सीताराम राजू का नाम स्वर्णिम अक्षरों में लिखा गया है जिनके जीवनवृत पर हाल ही में फिल्म भी बनी है। कार्यक्रम की अध्यक्षा डॉ अनीता रानी ने कहा कि रम्पा विद्रोह 1924 तक चला जिसने अंग्रेजों की नींद हराम कर दी थी। अंत में ब्रिटिश सेना बुलानी पड़ी। उसने पहले राजू के प्रमुख सहयोगियों को पकड़ा और अंत में 7 मई 1924 को अल्लूरी राजू भी उसकी पकड़ में आ गये और इसी दौरान अल्लूरी सीताराम राजू 27 वर्ष की आयु में गोली लगने से शहीद हो गये परन्तु अपने पीछे बलिदान की शौर्यगाथा छोड़ गया जिसकी प्रेरणा लेकर असंख्य क्रांतिकारी ब्रिटिश हुकूमत से टकराए।

129. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 120th Birth Anniversary of great freedom fighter and social reformer Swami Acchutanand on 05.07.2022 and delivered keynote address on "Swami Vivekananda: Contribution in the Awakening of Indian Youth ".

चरखी दादरी भास्कर 06-07-2022

स्वामी विवेकानंद ने आजीवन देश और मानव सेवा को प्राथमिकता दी

गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय कार्यक्रम में मौजूद छात्राएं।

भास्कर न्यूज | चरखी दादरी

गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में प्राचार्या डा. अनीता फोगाट की अध्यक्षता में महान स्वतंत्रता सेनानी स्वामी विवेकानंद की 120 लवीं पुण्यतिथि पर कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक डा. अमरदीप ने कहा कि स्वामी विवेकानंद ने आजीवन देश और मानव सेवा को प्राथमिकता दी। स्वामी विवेकानंद युवाओं के प्रेरणास्त्रोत है और उनकी शिक्षाएं आज भी प्रासंगिक है। उनका मूल मन्त्र उठो जागो और तब तक मत रुको, जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जायें हर युवा को जोश और उमंग से भर देता है और देश के प्रति समर्पित होने के भाव पैदा करता है। स्वामी विवेकानंद ने शिक्षा का मनुष्य का विकास का सर्वोत्तम साधन माना। उन्होंने भगवान को मन्दिरों में खोजने के बजाय दरिद्र नारायण की सेवा पर बल दिया।

प्रोफेसर जितेन्द्र ने कहा कि भारतीय संस्कृति का प्रचार करने के लिए वे 1893 में विश्व धर्म सम्मेलन में भाग लेने के शिकागो, अमेरिका गये और अपने सम्बोधन की शुरुआती पंक्ति अमेरिका के मेरे भाइयों और बहनों से सबको चौंका दिया था। डा. अनीता रानी ने कहा कि स्वामी विवेकानंद ने दुनिया को एक राष्ट्र के रूप में भारत की एकता की सच्ची नींव के बारे में बताया। उन्होंने सिखाया कि कैसे इतनी विशाल विविधता वाले राष्ट्र को मानवता और भाईचारे की भावना से एक साथ बांधा जा सकता है।

अमर उजाला, झज्जर 06.07.2022

'स्वामी विवेकानंद के आदर्शों को अपनाएं'

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महान स्वतंत्रता सेनानी स्वामी विवेकानंद की 120 वीं पुण्यतिथि के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डॉ अमरदीप ने कहा कि स्वामी विवेकानंद ने आजीवन देश और मानव सेवा को प्राथमिकता दी। स्वामी विवेकानंद युवाओं के प्रेरणास्रोत है और उनकी शिक्षायें आज भी प्रासंगिक हैं। उन्होंने भगवान को मंदिरों में खोजने के बजाय दरिद्र नारायण की सेवा पर बल दिया। इतिहास प्रोफेसर जितेंद्र ने कहा कि भारतीय संस्कृति का प्रचार करने के लिए वे 1893 में विश्व धर्म सम्मेलन में भाग लेने के शिकागो और अमेरिका गए थे।

भूगोल प्राध्यापक पवन कुमार ने कहा कि भारत वापस लौटकर उन्होंने 1 मई, 1897 को कोलकता के निकट बेलूर मठ में रामकृष्ण मिशन की स्थापना की। रामकृष्ण मिशन के लक्ष्य कर्म योग के आदर्शों पर आधारित थे और इसका प्राथमिक उद्देश्य देश की गरीब और संकटग्रस्त आबादी की सेवा करना था।

कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ अनीता रानी ने कहा कि स्वामी विवेकानंद ने दुनिया को एक राष्ट्र के रूप में भारत की एकता की सच्ची नींव के बारे में बताया। उन्होंने सिखाया कि कैसे इतनी विशाल विविधता वाले राष्ट्र को मानवता और भाईचारे की भावना से एक साथ बांधा जा सकता है।

कार्यक्रम को संबोधित करते वक्ता। संवाद

130. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 80th Birth Anniversary of great social reformer Guru Prasad Madan on 07.07.2022 and delivered keynote address on "Establishment of Egalitarian Society in Independent India and The Contribution of Guru Prasad Madan".

अमर उजाला, चरखी दादरी 07.07.2022

कार्यक्रम

राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में 125 वां कार्यक्रम आयोजित

समता मूलक समाज की स्थापना के प्रवर्तक गुरुप्रसाद को किया याद

संवाद न्यूज एजेंसी

चरखी दादरी। आजादी का अमृत महोत्सव श्रंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में 125 वां कार्यक्रम आयोजित किया गया।

महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. अनीता रानी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। इस दौरान महान समाज सुधारक एवं लेखक गुरुप्रसाद मदन के 80वें जन्मदिवस पर उन्हें नमन किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप ने कहा कि गुरु प्रसाद मदन ने आजीवन समतामूलक समाज की स्थापना के लिए कार्य किया। गुरु प्रसाद मदन का जन्म 1942 में अजुहा, उत्तर प्रदेश में हुआ था। उन्होंने आजादी के बाद भारतीय राष्ट्र और समाज के पुनर्निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1964 में गुरु प्रसाद मदन ने स्नातक की परीक्षा पास करने पर इनके पिता महाशय भिक्खुलाल ने गुरु प्रसाद से वचन लिया कि वे कभी भी सरकारी नौकरी नहीं करेंगे, बल्कि अपना सारा जीवन समाज के कल्याण एवं सुधार में लगाएंगे, जिसका पालन गुरु प्रसाद ने आजीवन किया। उन्होंने हाशिये पर रहने वाले समाज को शोषण कारी व्यवस्था से बचाने एवं नागरिकों में मानवाधिकारों के बारे में जागरूकता फैलाई।

बिरोहड़ राजकीय कॉलेज में छात्रों को जानकारी देते प्रोफेसर। संवाद

हिंदू आंदोलन के प्रवर्तक स्वामी अछुतानंद अपने प्रवास के दौरान गुरु प्रसाद के घर आते थे और उन्होंने ही इनका नामकरण किया था। गुरु प्रसाद मदन ने युवाओं को सिनेमा आदि के कुप्रभाव से बचाने के लिए ''गंदगी की जड़ : सिनेमा और लाउडस्पीकर'' जैसे लेख लिखे, जिसने युवाओं को बहुत प्रभावित किया। 1964 के लखनऊ में भूमि बंटवारा आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने अपनी लेखनी के माध्यम से सामाजिक-धार्मिक सुधार पर जोर देते हुए भारत में वर्ग विहीन एवं समतामूलक समाज की स्थापना का स्वप्न युवाओं के अंदर जागृत किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता एवं महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. अनिता रानी ने कहा कि गुरु प्रसाद मदन ने तीसरी कक्षा में पहली बार आर्य समाज की वेदी पर समाज सुधार के लिए भाषण दिया था। उसके बाद से लेकर संपूर्ण भारत में वे अपने हजारों भाषणों और लेखन के माध्यम से समाजोपयोगी कार्य कर चुके हैं, जिनका अनुकरण आज हर भारतीय को करना चाहिए।

UPSSSC PET
की तैयारी फ्री ई-बुक
और मॉक टेस्ट के साथ
परीक्षा तिथि: 18 सितम्बर, 2022
अभी स्कैन करें ये QR कोड

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 07.07.2022

समाज सुधारक गुरु प्रसाद मदन को 80 वें जन्मदिवस पर किया याद

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में बुधवार को 125वां कार्यक्रम महाविद्यालय प्राचार्या डा. अनिता फौगाट की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। जिसमें समाज सुधारक एवं लेखक गुरु प्रसाद मदन के 80वें जन्मदिवस के अवसर पर डा. अमरदीप ने कहा कि गुरु प्रसाद मदन ने आजीवन समतामूलक समाज की स्थापना के लिए कार्य किया। उनका जन्म 1942 में अजुहा उत्तरप्रदेश में हुआ था। 1964 में गुरु प्रसाद मदन ने स्नातक की परीक्षा पास की। गुरु प्रसाद मदन ने युवाओं को सिनेमा इत्यादि के कुप्रभाव से बचाने के लिए गंदगी की जड़ सिनेमा और लाउडस्पीकर जैसे लेख लिखे। प्राचार्या डा. अनिता रानी ने कहा कि गुरु प्रसाद मदन ने तीसरी कक्षा में पहली बार आर्य समाज की वेदी पर समाज सुधार के लिए भाषण दिया था।

विद्यार्थियों को गुरु प्रसाद मदन के बारे में बताते डा. अमरदीप। • विज्ञप्ति

डीसी शक्ति सिंह ने बताया कि प्रदेश आवेदन का प्रोफार्मा हरियाणा महिला भारद्वाज, लक्ष्मी नारायण काठपालिया, रवि वर्मा, इंदु शर्मा, यशिका-सृष्टि
सरकार ने हरियाणा की प्रियंका चुघ,
सुरक्षा को लेकर अहम गुलाटी, नयन
सरकार ने हरियाणा महिल नारंग, मानसी श
की ओर से गरीब प ष हंस, प्रिया
महिलाओं को चालक स सैनी सहित

अमर उजाला, झज्जर 07.07.2022

कार्यक्रम

गुरु प्रसाद ने समाज के पुनर्निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई : डॉ. अमरदीप

जयंती पर याद किए गए समाज सुधारक गुरु प्रसाद

संवाद न्यूज एजेंसी

सात्लहावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में कार्यक्रम महाविद्यालय प्राचार्या डॉ. अनीता फोगाट की अध्यक्षता में समाज सुधारक एवं लेखक गुरु प्रसाद मदन के जयंती के अवसर पर आयोजित किया गया। मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप ने कहा कि गुरु प्रसाद मदन ने आजीवन समतामूलक समाज की स्थापना के लिए कार्य किया।

कहा कि महान नेताओं के साथ साथ हमें सामान्य और गुमनाम व्यक्तित्व के संघर्ष पर प्रकाश डालना चाहिए। ऐसे ही गुरु प्रसाद मदन थे जिनका जन्म 1942 में अजुहा, उत्तर प्रदेश में हुआ था। जिन्होंने आजादी के पश्चात राष्ट्र और समाज के पुनर्निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1964 में स्नातक की परीक्षा पास करने पर इनके पिता महाशय भिक्खुलाल ने गुरु प्रसाद से वचन लिया कि वे कभी भी सरकारी नौकरी नहीं करेंगे बल्कि अपना सारा जीवन समाज के कल्याण एवं सुधार में लगाएंगे, जिसका पालन गुरु प्रसाद ने आजीवन किया। उन्होंने हाशिये पर रहने वाले समाज को शोषणकारी व्यवस्था से बचाने एवं नागरिकों में मानवाधिकारों के बारे में जागरूकता फैलाई। आदि हिंदू आंदोलन के प्रवर्तक स्वामी अछुतानंद अपने प्रवास के दौरान गुरु प्रसाद के घर आते थे। उन्होंने ही इनका नामकरण किया था। गुरु प्रसाद मदन ने युवाओं को सिनेमा इत्यादि के कुप्रभाव से बचाने के लिए 'गंदगी की जड़: सिनेमा और लाउडस्पीकर' जैसे लेख लिखे। जिसने युवाओं को बहुत प्रभावित किया। 1964 में लखनऊ में भूमि बंटवारा आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

गुरु प्रसाद मदन की जयंती पर व्याख्यान देते प्राध्यापक। संवाद

लखनऊ में भूमि बंटवारा आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई

इन्होंने अपनी लेखनी से सामाजिक-धार्मिक सुधार पर जोर देते हुए देश में वर्गविहीन एवं समतामूलक समाज की स्थापना का स्वप्न युवाओं में जागृत किया। कार्यक्रम की अध्यक्ष एवं महाविद्यालय प्राचार्या डॉ अनीता रानी ने कहा कि गुरु प्रसाद मदन ने तीसरी कक्षा में पहली बार आर्य समाज की वेदी पर समाज सुधार के लिए भाषण दिया था। उसके बाद से लेकर संपूर्ण भारत में वे अपने हजारों भाषणों और लेखन के माध्यम से समाजोपयोगी कार्य कर चुके हैं। जिनका अनुकरण आज हर भारतीय को करना चाहिए। जिससे समाज में फैली कुरीतियों को समूल नाश हो सके। खुशहाल राष्ट्र का निर्माण हो सके।

131. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 91st Martyrdom of great revolutionary and freedom fighter Dinesh Gupta on 08.07.2022 and delivered keynote address on "First Phase of Revolutionary Movement and Role of Dinesh Gupta".

ने अन्य
कि अधि
आकर

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 09.07.2022

अमृत महोत्सव श्रंखला के तहत गांव बिरोहड़ कालेज में क्रांतिकारी दिनेश गुप्ता का बलिदान दिवस मनाया

जास, चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में प्राचार्या डा. अनिता फौगाट की अध्यक्षता में क्रांतिकारी दिनेश गुप्ता के 91वें बलिदान दिवस पर कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक डा. अमरदीप ने कहा कि 19 वर्ष की अल्पायु में दिनेश गुप्ता ने ब्रिटिश हुकूमत से टक्कर लेते हुए भारत की आजादी में सर्वोच्च बलिदान दिया। दिनेश गुप्ता का जन्म छह दिसंबर 1911 को बंगाल के मुंशीगंज जिले के जोशोलाग गांव में हुआ। दिनेश गुप्ता ने अपने साथी विनय बसु और बादल गुप्ता के साथ योजना के अनुरूप कलकत्ता में डलहौजी स्क्वायर में सचिवालय भवन राइटर्स बिल्डिंग में घुसकर सिंपसन को आठ दिसंबर 1930 को मौत के घाट उतार दिया। प्राचार्या डा. अनिता रानी ने कहा कि पुलिस द्वारा घेर लिए जाने पर बादल गुप्ता ने पोटेशियम सायनाइड खा लिया जबकि बिनाय और दिनेश ने अपनी रिवाल्वर से खुद को गोली मार ली। लेकिन दिनेश गुप्ता बच गए और उनपर मुकदमा चलाया गया। दिनेश गुप्ता ने सात जुलाई 1931 को हंसते हंसते फांसी के फंदे पर झूल गए। इस अवसर पर डा. नरेंद्र सिंह, पवन कुमार, जितेंद्र इत्यादि भी मौजूद रहे।

बिरोहड़ के कालेज में क्रांतिकारी दिनेश गुप्ता के बारे में बताते डा. अमरदीप। विज्ञप्ति

132. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 112nd Birth Anniversary of great freedom fighter Aruna Asaf Ali on 16.07.2022 and delivered keynote address on "Role of Aruna Asaf Ali in Indian Freedom Struggle".

दैनिक भास्कर झज्जर भास्कर 17-07-2022

झज्जर-बहादुरगढ़

अमृत महोत्सव शृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में हुआ कार्यक्रम

स्वतंत्रता सेनानी अरुणा आसफ अली की 112वीं जयंती मनाई

भास्कर न्यूज | झज्जर

आजादी का अमृत महोत्सव शृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में प्राचार्या डॉ. अनीता फोगाट की अध्यक्षता में महान स्वतंत्रता सेनानी अरुणा आसफ अली की 112वीं जयंती पर के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप ने कहा कि अरुणा आसफ अली को स्वतंत्रता आंदोलन की ग्रैंड ओल्ड लेडी के रूप में विख्यात है। हरियाणा के कालका में 16 जुलाई 1909 को जन्मी अरुणा आसफ अली ने अपने संघर्ष और जीवटता की छाप पुरे आन्दोलन में छोड़ी। अरुणा ने 1930 के दांडी मार्च और जयप्रकाश नारायण, डॉ. राम मनोहर लोहिया, अच्युत पटवर्धन जैसे प्रख्यात समाजवादियों के विचारों से प्रभावित अरुणा ने 1942 ई. के भारत छोड़ो आन्दोलन में अंग्रेजों की जेल में बन्द होने के बदले भूमिगत रहकर अपने अन्य साथियों के साथ आन्दोलन का नेतृत्व करना समझते हुए आन्दोलन को नया जीवन प्रदान किया। महात्मा गांधी, सरदार पटेल, जवाहरलाल नेहरु इत्यादि नेताओं की गिरफ्तारी के तुरन्त बाद मुम्बई में विरोध सभा आयोजित करके विदेशी सरकार को खुली चुनौती देने वाली वे प्रमुख महिला थीं। ब्रिटिश सरकार ने 1942 में उनके खिलाफ उनके गैर जमानती वारंट जारी करते हुए 5000 रुपए का बड़ा इनाम रखना पड़ा जो अरुणा आसफ अली के वृहत प्रभाव का सूचक था। अरुणा आसफ अली ने राष्ट्रीय आन्दोलन से बढकर राष्ट्र निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। कार्यक्रम की अध्यक्षा प्राचार्या डॉ. अनीता रानी ने कहा कि अरुणा आसफ अली ने आजादी के संघर्ष में अविस्मरणीय भूमिका निभाई। 1948 ई. में अरुणा आसफ अली 'सोशलिस्ट पार्टी' में सम्मिलित हुई और दो साल बाद सन 1950 ई. में उन्होंने अलग से 'लेफ्ट स्पेशलिस्ट पार्टी' बनाई और वे सक्रिय होकर 'मजदूर-आंदोलन' में जी जान से जुट गईं। 29 जुलाई 1996 को अरुणा आसफ अली जैसा संघर्षशील व्यक्तित्व ने अंतिम सांस ली परन्तु अपने पीछे राष्ट्रीयता की भावना के विकास की अटूट मिसाल छोड़ी गई।

कॉलेज में छात्राओं को संबोधित करते हुए डॉ. अमरजीत।

अमर उजाला, झज्जर
16.07.2022

शहर में आज

कोरोना जांच शिविर

सामान्य अस्पताल : कोरोना की जांच के लिए सामान्य अस्पताल झज्जर में स्वास्थ्य विभाग की तरफ से सुबह 09 बजे शिविर का आयोजन किया जाएगा।

बिरहोड़ कॉलेज : आजादी के अमृत महोत्सव में स्नातकोत्तर इतिहास विभाग, राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में महान स्वतंत्रता सेनानी अरुणा आसफ अली के 113 वें जन्म दिवस पर विशेष कार्यक्रम दोपहर 1 बजे आयोजित किया जाएगा।

बाबा प्रसाद गिरि मंदिर : शहर के बाबा प्रसाद गिरि मंदिर में पतजंलि योग समिति के तत्वावधान शाम 5 बजे योग शिविर का आयोजन किया जाएगा।

एमसी पार्क : कच्चा बाबरा रोड पर स्थित एमसी पार्क में शुक्रवार को सुबह छह बजे योग शिविर का आयोजन किया जाएगा। जिसमें आसपास क्षेत्र के लोगा भाग लेंगे।

सेक्टर-2 : ब्रह्माकुमारी आश्रम में नियमित मुरली कक्षा में सुबह 7 बजे आध्यात्मिक बातें बताई जाएंगी।

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 17.7.2022

स्वतंत्रता सेनानी अरूणा आसफ अली के योगदान को किया याद

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में शनिवार को प्राचार्या डा. अनिता फौगाट की अध्यक्षता में स्वतंत्रता सेनानी अरुणा आसफ अली की 112वीं जयंती पर कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक डा. अमरदीप ने कहा कि अरुणा आसफ अली स्वतंत्रता आंदोलन की ग्रैंड ओल्ड लेडी के रूप में विख्यात है। हरियाणा के कालका में 16 जुलाई 1909 को जन्मी अरुणा आसफ अली ने अपने संघर्ष और जीवटता की छाप पूरे आंदोलन में छोड़ी। अरुणा ने 1930 के दांडी मार्च और सविनय अवज्ञा आंदोलन में भाग लेकर महिला शक्ति को प्रदर्शित किया। ब्रिटिश सरकार ने 1942 में उनके खिलाफ गैर जमानती वारंट जारी करते हुए 5000 रुपये का बड़ा इनाम रखना पड़ा। अरुणा आसफ अली ने राष्ट्रीय आंदोलन से बढ़कर राष्ट्र निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। अवसर पर मौाविद्यालय के विद्यार्थियों को स्वतत्रता सेनानी अरुणा आसफ अली के जीवन में स्वतंत्रता के लिए किए गए प्रयास के बारे में जानने व प्रेरणा लेने को मौका मिला।

गांव बिरोहड़ के सरकारी कालेज में स्वतंत्रता सेनानी अरुणा आसफ अली के बारे में बताते डा. अमरदीप। ● विज्ञप्ति

133. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 161st Birth Anniversary of first female doctor of colonial India and freedom fighter Kadambini Ganguli on 18.07.2022 and delivered keynote address on "First Female Doctor of colonial India and freedom fighter Kadambini Ganguli".

दैनिक भास्कर झज्जर भास्कर 19-07-2022

अमृत महोत्सव के तहत महान चिकित्सक कादंबिनी गांगुली की 161वीं जयंती मनाई

भास्कर न्यूज | झज्जर

आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में प्राचार्या डॉ. अनीता फोगाट की अध्यक्षता में महान चिकित्सक कादंबिनी गांगुली 161वीं जयंती पर के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप ने कहा कि कादंबिनी गांगुली भारत की पहली महिला डॉक्टर और महिला अधिकारों की चैंपियन थी। औपनिवेशिक भारत की वह पहली महिला थी जिन्होंने चिकित्सक की पढ़ाई की और उसमे डिग्री हासिल

छात्रों को संबोधित करते हुए शिक्षक।

की और वह भी तब जब लड़कियों को पढ़ने के अवसर मिले ही थे। 18 जुलाई 1861 में बंगाल के बारीसाल में जन्मी कादंबिनी गांगुली के पिता बृजकिशोर बासु एक स्कूल के हैडमास्टर थे इसलिए उन्होंने अपनी बेटी की पढ़ाई के लिए समाज के बहिष्कार का सामना करते हुए कादंबिनी को शुरूआती शिक्षा के लिए बंगा महिला विद्यालय में दाखिला दिलवाया। 1883 में इनकी शादी द्वारकानाथ गांगुली से हुई जिन्होंने कादंबिनी की शिक्षा के चक्र को दुगुनी गति से आगे बढ़ाया और कोलकाता के बेथ्यून कॉलेज में एडमिशन करवाया जहां से कादम्बिनी ने चंद्रमुखी बासु के साथ स्नातक की परीक्षा पास की।

अमर उजाला, झज्जर 19.07.2022

कादंबिनी ने बुलंद की महिलाओं की आवाज

राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में गांगुली की जयंती पर कार्यक्रम का आयोजन

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महान चिकित्सक कादंबिनी गांगुली 161 वीं जयंती पर विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डॉ अमरदीप ने कहा कि कादंबिनी गांगुली भारत की पहली महिला डॉक्टर और महिला अधिकारों की चैंपियन थी। उन्होंने कहा कि औपनिवेशिक भारत की वह पहली महिला थी जिन्होंने चिकित्सक की पढ़ाई की और उसमे डिग्री हासिल की और वह भी तब जब लड़कियों को पढ़ने के अवसर विरले ही थे। 18 जुलाई 1861 में बंगाल के बारीसाल में जन्मी कादंबिनी गांगुली के पिता बृजकिशोर बासु एक स्कूल के हैडमास्टर थे। इसलिए उन्होंने अपनी बेटी की पढ़ाई के लिए समाज के बहिष्कार का सामना करते हुए कादंबिनी को शुरूआती शिक्षा के लिए बंगा महिला विद्यालय में दाखिला दिलवाया। 1883 में इनकी शादी द्वारकानाथ गांगुली से हुई जिन्होंने कादंबिनी की शिक्षा के चक्र को दुगुनी गति से आगे बढ़ाया और कोलकाता के बेथ्यून कॉलेज में एडमिशन करवाया। जहां से कादंबिनी ने चंद्रमुखी बासु के साथ स्नातक की परीक्षा पास की। समाज से संघर्ष करते हुए कादम्बिनी ने चिकित्सा की परीक्षा उत्तीर्ण की और 1886 में आनंदी गोपाल जोशी के साथ पश्चिमी चिकित्सा का अभ्यास करने वाली पहली भारतीय महिला चिकित्सक बन गई।

महाविद्यालय के बर्सर डॉ नरेंद्र सिंह ने कहा कि वह चिकित्सा में कई विदेशी डिग्री प्राप्त करने का दुर्लभ कौशल दिखाने वाली भारत की पहली महिला चिकित्सक बनी।

भूगोल प्रोफेसर पवन कुमार ने कहा कि चिकित्सा के साथ साथ देश सेवा के लिए भी उन्होंने कार्य किया। उन्होंने 1899 में पहली महिला प्रतिनिधियों में से एक के रूप में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में शामिल हुई और कांग्रेस के मंच से भाषण देकर महिला सशक्तिकरण की आवाज बुलंद की।

कार्यक्रम की अध्यक्षा प्राचार्य डॉ अनीता रानी ने कहा कि एक स्वतंत्र चिकित्सक के रूप में उनके प्रयासों ने पूरे एशिया में महिलाओं की शिक्षा,रोजगार और स्व-स्थापना के लिए एक नई दिशा खोली। उसे देख कई महिलाएं आगे आईं। हालांकि राह आसान नहीं थी लेकिन धीरे-धीरे कई वर्षों का ठहराव टूटने लगा और एक नये समाज के निर्माण होने लगा जहां महिलाओं के अधिकारों को स्वीकृति मिलने लगी।

134. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 195th Birth Anniversary of great freedom fighter Mangal Pandey on 19.07.2022 and delivered keynote address on "Mangal Pandey and untold history of 1857."

अमर उजाला, झज्जर 20.07.2022

'मंगल पांडे से कांपती थी अंग्रेजी हुकूमत'

राजकीय पीजी कालेज बिरोहड़ में मंगल पांडे की जयंती पर व्याख्यान

संवाद न्यूज एजेंसी

बिरोहड कालेज में सेमिनार में व्याख्यान करते प्रवक्ता। संवाद

साल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महान स्वतंत्रता सेनानी मंगल पांडे की 195 वीं जयंती पर के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया।

मुख्य वक्ता डॉ अमरदीप ने कहा कि मंगल पांडे ने अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ आजादी का एलान किया था। 19 जुलाई 1827 को फैजाबाद के सरूरपुर में जन्में मंगल पांडे मूल रूप से यूपी के बलिया जिले के नगवां गांव के रहने वाले थे। 1849 में 18 साल की उम्र में वह ईस्ट इंडिया कंपनी की 34वीं बंगाल नेटिव इंफैंट्री में सिपाही के तौर पर भर्ती हुए। 1856 में में सिपाहियों के लिए नई इनफील्ड राइफल लाई गई लेकिन इसने अंग्रेजी साम्राज्य की सुरक्षा की बजाय विद्रोह को जन्म दिया। इस राइफल की कारतूस में चर्बी मिली होती थी जिसे मुंह से काटकर राइफल में लोड करना होता था। यह भारतीयों की धार्मिक भावनाओं के साथ न्यायसंगत नही थी। कुछ सबाल्टर्न इतिहासकार कहते है कि इसकी जानकारी मातादीन द्वारा भी मंगल पांडे को दी गई थी।

कार्यक्रम की अध्यक्षा प्राचार्य डॉ अनीता रानी ने कहा कि ऐसे समय में बंगाल के बैरकपुर छावनी में तैनात मंगल पांडे ने 29 मार्च 1857 को विद्रोह करके दो अंग्रेज अफसरों पर हमला कर दिया। इस विद्रोह के कारण मंगल पांडे को 8 अप्रैल 1857 फांसी दी गई। इस घटना से आजादी के संग्राम को नई उर्जा मिली और देखते देखते यह एक बड़े स्तर पर फ़ैल गया जिसमें लाखों भारतीयों ने भाग लेकर अंग्रेजी साम्राज्य को हिला दिया था।

दैनिक भास्कर चरखी दादरी भास्कर 20-07-2022

बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में स्वतंत्रता सेनानी की 195वीं जयंती पर कार्यक्रम

मंगल पांडे ने ब्रितानिया हुकूमत पर गोली चलाकर आज़ादी का कर दिया था ऐलान

भास्कर न्यूज | चरखी दादरी

बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में प्राचार्या डा. अनीता फोगाट की अध्यक्षता में महान स्वतंत्रता सेनानी मंगल पांडे की 195वीं जयंती पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक डा. अमरदीप ने कहा कि मंगल पांडे ने ब्रितानिया हुकूमत पर गोली चलाकर आजादी का ऐलान किया था।

19 जुलाई 1827 को फैजाबाद के सुरुरपुर में जन्में मंगल पांडे मूल रूप से यूपी के बलिया जिले के नगवा गांव के रहने वाले थे। 1849 में 18 साल की उम्र में वह ईस्ट इंडिया कंपनी की 34वीं बंगाल नेटिव इन्फैन्ट्री में सिपाही के तौर पर भर्ती हुए। 1856 में में सिपाहियों के लिए नई इनफील्ड राइफल लाई गई परन्तु इसने अंग्रेजी साम्राज्य की सुरक्षा की बजाय विद्रोह को जन्म दिया। इस राइफल की कारतूस में गाय और सुअर की चर्बी मिली होती थी जिसे मुंह से काटकर राइफल में लोड करना होता था। यह भारतीयों की धार्मिक भावनाओं के साथ न्यायसंगत नही थी।

कुछ सबाल्टर्न इतिहासकार कहते है कि इसकी जानकारी मातादीन द्वारा भी मंगल पांडे को दी गई थी। कार्यक्रम की अध्यक्षा प्राचार्या डा. अनीता रानी ने कहा कि ऐसे समय में बंगाल के बैरकपुर छावनी में तैनात मंगल पांडे ने 29 मार्च 1857 को विद्रोह करके दो अंग्रेज अफसरों पर हमला कर दिया। इस विद्रोह के कारण मंगल पांडे को 8 अप्रैल 1857 फांसी दी गई। इस घटना से आजादी के संग्राम को नई उर्जा मिली और देखते देखते यह एक बड़े स्तर पर फ़ैल गया जिसमें लाखों भारतीयों ने भाग लेकर अंग्रेजी साम्राज्य को हिला दिया था।

बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते वक्ता।

135. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 116th Death Anniversary of great freedom fighter Womesh Chandra Bonnerji on 19.07.2022 and delivered keynote address on "Womesh Chandra Bonnerji: Establishment of Indian National Congress and Indian Freedom Struggle".

दैनिक भास्कर झज्जर भास्कर 22-07-2022

स्वतंत्रता सेनानी व्योमेश चन्द्र बनर्जी की कॉलेज में 116वीं पुण्यतिथि मनाई

आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में हुआ कार्यक्रम

भास्कर न्यूज | झज्जर

आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महान स्वतंत्रता सेनानी व्योमेश चन्द्र बनर्जी की 116वीं पुण्यतिथि मनाई। प्राचार्या डॉ. अनीता फोगाट की अध्यक्षता में कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप ने कहा कि व्योमेश चन्द्र बनर्जी भारतीय आजादी के आन्दोलन के पहली पीढ़ी के अग्रणी नेता थे। उन्होंने नमक कर की जोरदार मुखालफत करके राष्ट्रीय आन्दोलन को आम आदमी के जीवन से जोड़ने की नींव रखी जिस पर 1930 में महात्मा गांधी ने दांडी मार्च जैसा बड़ा मजबूत आन्दोलन करके ब्रिटिश साम्राज्य को हिला दिया था। 29 दिसंबर 1844 को जन्में व्योमेश ने भारतीय राजनीति को एक नया आयाम दिया।

छात्रों को इतिहास के बारे में जानकारी देते हुए।

वकील के तौर पर अपना करियर शुरू किया और सुरेन्द्र नाथ बनर्जी का बचाव पक्ष का वकील बनकर भारतीयों के प्रति अंग्रेजी शोषण को सबके सामने प्रदर्शित किया। 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रथम अधिवेशन का अध्यक्ष बनकर आजादी के आन्दोलन की नई मुहीम शुरू की जिसमें ये स्वयं शिक्षक और विद्यार्थी थे जिनका मुख्य कार्य भारतीय मुद्दों पर एक सहमति तैयार करके जनमत बनाना था और उसमें ये सफल भी रहे। भारत के मुद्दों को लन्दन में उठाने के लिए उन्होंने हाउस ऑफ़ कॉमन्स का चुनाव भी लड़ा। कार्यक्रम की अध्यक्षा प्राचार्या डॉ. अनीता रानी ने कहा कि व्योमेश चन्द्र बनर्जी ने आजादी के राष्ट्रीय आन्दोलन में उस समय महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जब अंग्रेजी हुकूमत भारतीय जनता को हीन भावना से देखती थी। बनर्जी ने राष्ट्रीय हितों को ध्यान में रखकर राजनीति की नींव डाली जिसपर आगे चलकर एक मजबूत आन्दोलन खड़ा हो पाया। एक लम्बी बीमारी के चलते 21 जुलाई 1906 को यह महान सेनानी भारत की आजादी के लिए कार्य करता हुआ दुनिया से चला गया।

वर्षीय मास्टर ...आ है।
कैटरिंग टेक्नी... झांसवा ने बताया
समेकित पाठ्य... में विद्यालय के 11

अमर उजाला, झज्जर 22.07.2022

पुण्यतिथि पर व्योमेश बनर्जी को किया याद

राजकीय पीजी कालेज में वक्ताओं ने बनर्जी के बारे में दी जानकारी

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महान स्वतंत्रता सेनानी व्योमेश चंद्र बनर्जी की 116 वीं पुण्यतिथि पर उन्हें याद किया।

कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप ने कहा कि व्योमेश चंद्र बनर्जी भारतीय आजादी के आंदोलन के पहली पीढ़ी के अग्रणी नेता थे। उन्होंने नमक पर कर की जोरदार मुखालफत करके राष्ट्रीय आंदोलन को आम आदमी के जीवन से जोड़ने की नींव रखी। जिस पर 1930 में महात्मा गांधी ने दांडी मार्च जैसा बड़ा मजबूत आंदोलन करके ब्रिटिश साम्राज्य को हिला दिया था।

उन्होंने कहा कि 29 दिसंबर 1844 को जन्में व्योमेश ने भारतीय राजनीति को एक नया आयाम दिया। वकील के तौर पर अपना कॅरिअर शुरू किया।1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रथम अधिवेशन के अध्यक्ष बनकर आजादी के आंदोलन की नई मुहिम शुरू की। जिसमें ये स्वयं शिक्षक और विद्यार्थी थे जिनका मुख्य कार्य भारतीय मुद्दों पर एक सहमती तैयार करके जनमत बनाना था और उसमे ये सफल भी रहे। कार्यक्रम की अध्यक्ष प्राचार्य डॉ अनीता रानी ने कहा कि व्योमेश चंद्र बनर्जी ने राष्ट्रीय हितों को ध्यान में रखकर राजनीति की नींव डाली जिस पर आगे चलकर एक मजबूत आंदोलन खड़ा हो पाया। एक लम्बी बीमारी के चलते 21 जुलाई 1906 को यह महान सेनानी भारत की आजादी के लिए कार्य करता हुआ दुनिया से चला गया।

विद्यार्थियों को व्याख्यान देते डॉ अमरदीप। संवाद

दैनिक भास्कर चरखी दादरी भास्कर 22-07-2022

आंदोलन के पहली पीढ़ी के अग्रणी नेता थे बनर्जी

बनर्जी की 116वीं पुण्यतिथि पर कार्यक्रम

भास्कर न्यूज | चरखी दादरी

गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में प्राचार्या डा. अनीता फौगाट की अध्यक्षता में महान स्वतंत्रता सेनानी व्योमेश चन्द्र बनर्जी की 116वीं पुण्यतिथि पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. अमरदीप ने कहा कि व्योमेश चंद्र बनर्जी भारतीय आजादी के आंदोलन के पहली पीढ़ी के अग्रणी नेता थे।

उन्होंने नमक कर की जोरदार मुखालफत करके राष्ट्रीय आंदोलन को आम आदमी के जीवन से जोड़ने की नींव रखी जिस पर 1930 में महात्मा गांधी ने दांडी मार्च जैसा बड़ा मजबूत आंदोलन करके ब्रिटिश साम्राज्य को हिला दिया था। 29 दिसंबर 1844 को जन्में व्योमेश ने भारतीय राजनीति को एक नया आयाम दिया। वकील के तौर पर अपना करियर शुरू किया और सुरेंद्रनाथ बनर्जी का बचावपक्ष का वकील बनकर भारतीयों के प्रति अंग्रेजी शोषण को सबके सामने प्रदर्शित किया। 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रथम अधिवेशन का अध्यक्ष बनकर आजादी के आंदोलन की नई मुहिम शुरू की जिसमे ये स्वयं शिक्षक और विद्यार्थी थे जिनका मुख्य कार्य भारतीय मुद्दों पर एक सहमती तैयार करके जनमत बनाना था और उसमे ये सफल भी रहे। भारत के मुद्दों को लंदन में उठाने के लिए उन्होंने हाउस ऑफ़ कॉमन्स का चुनाव भी लड़ा। कार्यक्रम की अध्यक्षा प्राचार्या डॉ. अनीता रानी ने कहा कि व्योमेश चन्द्र बनर्जी ने आजादी के राष्ट्रीय आंदोलन में उस समय महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जब अंग्रेजी हुकुमत भारतीय जनता को हीन भावना से देखती थी। बनर्जी ने राष्ट्रीय हितों को ध्यान में रखकर राजनीति की नींव डाली जिसपर आगे चलकर एक मजबूत आंदोलन खड़ा हो पाया। एक लंबी बीमारी के चलते 21 जुलाई 1906 को यह महान सेनानी भारत की आजादी के लिए कार्य करता हुआ दुनिया से चला गया।

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 22.7.2022

गांव बिरोहड़ के सरकारी कालेज में व्योमेश बनर्जी को किया याद

जासं, चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में प्राचार्या डा. अनिता फौगाट की अध्यक्षता में स्वतंत्रता सेनानी व्योमेश चंद्र बनर्जी की 116 वीं पुण्यतिथि पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक डा. अमरदीप ने कहा कि व्योमेश चंद्र बनर्जी भारतीय आजादी के आंदोलन के पहली पीढ़ी के अग्रणी नेता थे। उन्होंने नमक कर का विरोध कर राष्ट्रीय आंदोलन को आम आदमी के जीवन से जोड़ने की नींव रखी। जिस पर 1930 में महात्मा गांधी ने दांडी मार्च जैसा बड़ा मजबूत आंदोलन करके ब्रिटिश साम्राज्य को हिला दिया था। 29 दिसंबर 1844 को जन्मे व्योमेश ने भारतीय राजनीति को एक नया आयाम दिया। वकील के तौर पर अपना करियर शुरू किया और सुरेंद्र नाथ बनर्जी का बचाव पक्ष का वकील बनकर भारतीयों के प्रति अंग्रेजी शोषण को सबके सामने प्रदर्शित किया।

गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में छात्रों को संबोधित करते डा. अमरदीप। ● विज्ञप्ति।

136. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 116th Birth Anniversary of great freedom fighter and Revolutionary Chandra Shekhar Azad on 22.07.2022 and delivered keynote address on "Contribution of Chandra Shekhar Azad in Revolutionary Movement".

झज्जर भास्कर 23-07-2022

बिरोहड़ के राजकीय कॉलज में महान क्रांतिकारी चंद्रशेखर आजाद की 116वीं जयंती मनाई

'आजाद ब्रिटिश भारत के सबसे बड़े क्रांतिकारी और संगठनकर्ता थे शहीद चंद्रशेखर आजाद'

भास्कर न्यूज | झज्जर

झज्जर. राजकीय कॉलेज में कार्यक्रम के दौरान मौजूद छात्राएं वक्ता।

आजादी का अमृत महोत्सव शृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महान क्रांतिकारी चंद्रशेखर आजाद की 116वीं जयंती के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. अमरदीप ने कहा कि आजादी के लिए कुर्बान होने वालों में देशभक्तों में चंद्रशेखर आजाद का नाम सबसे ऊपर है। आजाद ब्रिटिश भारत के सबसे बड़े क्रांतिकारी और संगठनकर्ता थे जिन्होंने भारत भर से आजादी के लिए संघर्ष करने के लिए नवयुवकों को प्रोत्साहित किया और उन्हें एक सूत्र में पिरोने का कार्य किया। चंद्रशेखर आजाद का जन्म 23 जुलाई, 1906 को मध्य प्रदेश के झाबुआ जिले के भाबरा नामक स्थान पर हुआ था। महज 15 साल की आयु में चन्द्र शेखर आजाद असहयोग आन्दोलन में कूद पड़े एवं जब उन्हें 1921 में गिरफ्तार किया गया और मुकदमे के दौरान जब जज ने चंद्रशेखर से उसका नाम पूछा तो उन्होंने ने कहा, 'मेरा नाम आजाद है, मेरे पिता का नाम स्वतंत्रता और मेरा घर जेल है'। जज ये सुनने के बाद भड़क गए और चंद्रशेखर को 15 कोड़ों की सजा सुनाई, यही से उनका नाम आजाद पड़ गया। सन 1922 में चौरी चौरा की घटना के बाद महात्मा गांधी ने असहयोग आंदोलन वापस ले लिया तो आजाद का कांग्रेस से मोहभंग हो गया और वे राम प्रसाद बिस्मिल और शचीन्द्रनाथ सान्याल, योगेश चन्द्र चटर्जी द्वारा गठित हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन से जुड़ गए। इस एसोसिएशन के साथ जुड़ने के बाद चंद्रशेखर ने रामप्रसाद बिस्मिल के नेतृत्व में काकोरी कांड में सक्रिय रूप से भाग लिया। इसके बाद चंद्रशेखर ने भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव के साथ मिलकर 1928 में लाहौर में ब्रिटिश पुलिस ऑफिसर एसपी सॉन्डर्स को गोली मारकर लाला लाजपत राय की मौत का बदला लिया। इन सफल घटनाओं के बाद उन्होंने अंग्रेजों के खजाने को लूट कर संगठन की क्रांतिकारी गतिविधियों के लिए धन जुटाना शुरू कर दिया। चंद्रशेखर का मानना था कि यह धन भारतीयों का ही है जिसे अंग्रेजों ने लूटा है और अब इसका प्रयोग भारत की आजादी के लिए किया जाना चाहिए। प्राचार्या डॉ. अनीता रानी ने कहा कि 27 फरवरी 1931 को अंग्रेजों से लड़ाई करने के लिए चंद्रशेखर आजाद इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में सुखदेव राज और अपने एक अन्य साथियों के साथ बैठकर आगामी योजना बना रहे थे। इस बात की जानकारी अंग्रेजों को पहले से ही मिल गई थी और अचानक ब्रिटिश पुलिस ने उन पर हमला कर दिया। इस लड़ाई में पुलिस की गोलियों से आजाद बुरी तरह घायल हो गए थे। उन्होंने संकल्प लिया था कि वे न कभी पकड़े जाएंगे और न ब्रिटिश सरकार उन्हें फांसी दे सकेगी। इसीलिए अपने संकल्प को पूरा करने के लिए अपनी पिस्तौल की आखिरी गोली खुद को मार ली और मातृभूमि के लिए प्राणों की आहुति दे दी एवं अपने पीछे देशभक्ति की ऐसी मिसाल छोड़ गए जिसने आने वाली पीढ़ियों को प्रेरणा दी। डॉ. नरेंद्र सिंह और अजय सिंह इत्यादि उपस्थित रहे।

अमर उजाला, झज्जर 23.07.2022

जयंती

राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में कार्यक्रम आयोजित

क्रांतिकारी चंद्रशेखर आजाद को किया गया याद

संवाद न्यूज एजेंसी

सालहावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में क्रांतिकारी चंद्रशेखर आजाद की 116 वीं जयंती के अवसर पर कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक डॉ. अमरदीप ने कहा कि आजादी के लिए कुर्बान होने वालों में देशभक्तों में चंद्रशेखर आजाद का नाम सबसे ऊपर है। चंद्रशेखर आजाद का जन्म 23 जुलाई, 1906 को मध्य प्रदेश के झाबुआ जिले के भाबरा नामक स्थान पर हुआ था। महज 15 साल की आयु में चंद्रशेखर आजाद असहयोग आंदोलन में कूद पड़े एवं जब उन्हें 1921 में गिरफ्तार किया गया और मुकदमे के दौरान जब जज ने चंद्रशेखर से उसका नाम पूछा तो उन्होंने ने कहा, 'मेरा नाम आजाद है, मेरे पिता का नाम स्वतंत्रता और मेरा घर जेल है'। जज ये सुनने के बाद भड़क गए और चंद्रशेखर को 15 कोड़ों की सजा सुनाई, यही से उनका नाम आजाद पड़ गया। इस घटना ने चंद्रशेखर की पूरी जिंदगी बदल दी। चौरी चौरा की घटना के बाद महात्मा गांधी ने असहयोग आंदोलन वापस ले लिया तो आजाद का कांग्रेस से मोहभंग हो गया और वे राम प्रसाद बिस्मिल और शचीन्द्रनाथ सान्याल, योगेश चन्द्र चटर्जी द्वारा गठित हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन से जुड़ गए। इस एसोसिएशन के साथ जुड़ने के बाद चंद्रशेखर ने रामप्रसाद बिस्मिल के नेतृत्व में काकोरी कांड में सक्रिय रूप से भाग लिया। इसके बाद चंद्रशेखर ने भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव के साथ मिलकर 1928 में लाहौर में ब्रिटिश पुलिस ऑफिसर एसपी सॉन्डर्स को गोली मारकर लाला लाजपत राय की मौत का बदला लिया।

बिरोहड़ कॉलेज में आयोजित कार्यक्रम में मौजूद छात्राएं। संवाद

अध्यक्षा प्राचार्य डॉ. अनीता रानी ने कहा कि 27 फरवरी 1931 को अंग्रेजों से लड़ाई करने के लिए चंद्रशेखर आजाद इलाहाबाद(प्रयागराज) के अल्फ्रेड पार्क में सुखदेव राज और अपने एक अन्य साथियों के साथ बैठकर योजना बना रहे थे। इस बात की जानकारी अंग्रेजों को पहले से ही मिल गई थी और ब्रिटिश पुलिस ने उन पर हमला कर दिया। आजाद साथियों को सुरक्षित निकालकर अकेले अंग्रेजों से भिड़ गये। इस लड़ाई में पुलिस की गोलियों से आजाद घायल हो गए थे। संकल्प लिया था कि वे न कभी पकड़े जाएंगे और न ब्रिटिश सरकार उन्हें फांसी दे सकेगी। इसलिए संकल्प को पूरा करने के लिए अपनी पिस्तौल की आखिरी गोली खुद को मार ली।

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 23.07.2022

क्रांतिकारी चंद्रशेखर आजाद की कुर्बानी को छात्रों, शिक्षकों ने किया याद

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में क्रांतिकारी चंद्रशेखर आजाद की 116वीं जयंती के अवसर पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक डा. अमरदीप ने कहा कि आजादी के लिए कुर्बान होने वालों में देशभक्तों में चंद्रशेखर आजाद का नाम सबसे ऊपर है। आजाद ब्रिटिश भारत के सबसे बड़े क्रांतिकारी और संगठनकर्ता थे जिन्होंने भारत की आजादी में संघर्ष करने के लिए नवयुवकों को प्रोत्साहित किया और उन्हें एकसूत्र में पिरोने का कार्य किया। चंद्रशेखर आजाद का जन्म 23 जुलाई 1906 को मध्यप्रदेश के झाबुआ जिले के भाबरा में हुआ। केवल 15 साल की आयु में चंद्रशेखर असहयोग आंदोलन में कूद पड़े एवं जब उन्हें 1921 में गिरफ्तार किया गया और मुकदमे के दौरान जब जज ने चंद्रशेखर से उसका नाम पूछा तो उन्होंने अपना नाम आजाद बताया। यह सुनने के बाद जज भड़क गए और चंद्रशेखर को 15 कोड़ों की सजा सुनाई। यही से उनका नाम आजाद पड़ गया। इस घटना ने चंद्रशेखर की पूरी जिंदगी बदल दी। कार्यक्र म की अध्यक्ष प्राचार्या डा. अनिता रानी ने कहा कि 27 फरवरी 1931 को अंग्रेजों से लड़ाई करने के लिए चंद्रशेखर आजाद इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में सुखदेव, राज और अपने एक अन्य साथी के साथ बैठकर आगामी योजना बना रहे थे। इस बात की जानकारी अंग्रेजों को पहले से ही मिल गई थी और अचानक ब्रिटिश पुलिस ने उन पर हमला कर दिया। आजाद अपने साथियों को सुरक्षित निकालकर अकेले अंग्रेजों से भिड़ गए। इस लड़ाई में पुलिस की गोलियों से आजाद बुरी तरह घायल हो गए थे। उन्होंने संकल्प लिया था कि वे न कभी पकड़े जाएंगे और न ब्रिटिश सरकार उन्हें फांसी दे सकेगी। इसलिए अपने संकल्प को पूरा करने के लिए अपनी पिस्तौल की आखिरी गोली खुद को मार ली और मातृभूमि के लिए प्राणों की आहुति दे दी। इस अवसर पर डा. नरेंद्र सिंह और अजय सिंह ने भी अपने विचार रखे।

गांव बिरोहड़ के सरकारी कालेज में क्रांतिकारी क्रातिकारी चंद्रशेखर आजाद के बारे में बताते डा. अमरदीप। ● विज्ञप्ति।

137. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 166th Birth Anniversary of great freedom fighter Bal Gangadhar Tilak on 23.07.2022 and delivered keynote address on "Nationalism and Role of Bal Gangadhar Tilak".

दैनिक भास्कर झज्जर भास्कर 24-07-2022

महान स्वतंत्रता सेनानी बाल गंगाधर तिलक की 166वीं जयंती मनाई

आजादी के अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में हुआ कार्यक्रम

भास्कर न्यूज | झज्जर

आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महान स्वतंत्रता सेनानी बाल गंगाधर तिलक की 166वीं जयंती के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. अमरदीप ने कहा कि स्वराज के विचार को लोकप्रिय एवं जनसाधारण तक पहुंचाने का श्रेय बाल गंगाधर तिलक को जाता है। बाल गंगाधर तिलक का जन्म 23 जुलाई 1856 को महाराष्ट्र के कोंकण प्रदेश के चिखली गांव में हुआ था। लोकमान्य तिलक ने अंग्रेजी शासन की क्रूरता और भारतीय संस्कृति के प्रति हीन

महान स्वतंत्रता सेनानियों के बारे में विचार प्रकट करते हुए।

भावना की बहुत आलोचना की। तिलक भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में शामिल हुए लेकिन उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ कांग्रेस का नरमपंथी रवैये की बजाय गरमपंथी विचारधारा का प्रसार किया जिसमें बिपिन चन्द्र पाल और लाला लाजपत राय ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन तीनों को लाल-बाल-पाल के नाम से जाना जाने लगा। 1908 में लोकमान्य तिलक ने क्रान्तिकारी प्रफुल्ल चाकी और खुदीराम बोस के बम हमले का समर्थन किया जिसकी वजह से उन्हें बर्मा स्थित मांडले की जेल भेज दिया गया। जेल से छूटकर वो फिर कांग्रेस में शामिल हो गए और 1916 में एनी बेसेंट और मुहम्मद अली जिन्ना के साथ अखिल भारतीय होम रूल लीग की स्थापना की और सम्पूर्ण भारत में होमरूल के लिए आन्दोलन चलाया। कार्यक्रम की अध्यक्षा प्राचार्या डॉ. अनीता रानी ने कहा कि 1916 के लखनऊ अधिवेशन में कांग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच समझौता करवाने में तिलक ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। स्वास्थ्य में गिरावट के आने के बाद 1 अगस्त 1920 ई. को मुंबई में उनकी मृत्यु हो गई। परन्तु अपने पीछे संघर्ष एवं स्वराज की विचारधारा छोड़ गये जिससे भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन मजबूत हुआ।

दैनिक भास्कर चरखी दादरी भास्कर 24-07-2022

बाल गंगाधर तिलक से भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन मजबूत हुआ था

भास्कर न्यूज | चरखी दादरी

गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में महान स्वतंत्रता सेनानी बाल गंगाधर तिलक की 166वीं जयंती पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। संयोजक डा. अमरदीप ने कहा के स्वराज के विचार को लोकप्रिय एवं जनसाधारण तक पहुंचाने का श्रेय बाल गंगाधर तिलक को जाता है। बाल गंगाधर तिलक का जन्म 23 जुलाई, 1856 को महाराष्ट्र के कोंकण प्रदेश के चिखली गांव में हुआ था। लोकमान्य तिलक ने अंग्रेजी शासन की क्रूरता और भारतीय संस्कृति के प्रति हीन भावना की बहुत आलोचना की। तिलक भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में शामिल हुए लेकिन उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ कांग्रेस का नरमपंथी रवैये की बजाय गरमपंथी विचारधारा का प्रसार किया जिसमें बिपिन चन्द्र पाल और लाला लाजपत राय ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन तीनों को लाल-बाल-पाल के नाम से जाना जाने लगा। 1908 में लोकमान्य तिलक ने क्रान्तिकारी प्रफुल्ल चाकी और खुदीराम बोस के बम हमले का समर्थन किया जिसकी वजह से उन्हें बर्मा स्थित मांडले की जेल भेज दिया गया। जेल से छूटकर वो फिर कांग्रेस में शामिल हो गये और 1916 में एनी बेसेंट और मुहम्मद अली जिन्ना के साथ अखिल भारतीय होम रूल लीग की स्थापना की और सम्पूर्ण भारत में होमरूल के लिए आन्दोलन चलाया। कार्यक्रम की अध्यक्षा प्राचार्या डा. अनीता रानी ने कहा कि 1916 के लखनऊ अधिवेशन में कांग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच समझौता करवाने में तिलक ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। स्वास्थ्य में गिरावट के आने के बाद 1 अगस्त 1920 ई. को मुंबई में उनकी मृत्यु हो गयी। परन्तु अपने पीछे संघर्ष एवं स्वराज की विचारधारा छोड़ गये जिससे भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन मजबूत हुआ।

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 24.07.2022

स्वतंत्रता सेनानी बाल गंगाधर तिलक ने राष्ट्रीय आंदोलन में निभाई अहम भूमिका : डा. अमरदीप

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : गांव बिरोहड़ स्थित राजकीय महाविद्यालय में आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में स्वतंत्रता सेनानी बाल गंगाधर तिलक की 166 वीं जयंती पर एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक डा. अमरदीप ने कहा कि स्वराज के विचार को लोकप्रिय एवं जनसाधारण तक पहुंचाने का श्रेय बाल गंगाधर तिलक को जाता है।

बाल गंगाधर तिलक का जन्म 23 जुलाई, 1856 को महाराष्ट्र के कोंकण प्रदेश के चिखली गांव में हुआ था। लोकमान्य तिलक ने अंग्रेजी शासन की क्रूरता और भारतीय संस्कृति के प्रति हीन भावना की बहुत आलोचना की। तिलक भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में शामिल हुए लेकिन उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ कांग्रेस का नरमपंथी रवैये की बजाय गरमपंथी विचारधारा का प्रसार किया जिसमें बिपिन चंद्र पाल और लाला लाजपत राय ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

बिरोहड़ के सरकारी कालेज में बाल गंगाधर तिलक के बारे में बताते डा. अमरदीप● विज्ञप्ति।

इन तीनों को लाल-बाल-पाल के नाम से जाना जाने लगा। 1908 में लोकमान्य तिलक ने क्रांतिकारी प्रफुल्ल चाकी और खुदीराम बोस के बम हमले का समर्थन किया जिसकी वजह से उन्हें बर्मा स्थित मांडले की जेल भेज दिया गया। जेल से छूटकर वो फिर कांग्रेस में शामिल हो गए और 1916 में एनी बेसेंट और मुहम्मद अली जिन्ना के साथ अखिल भारतीय होम रूल लीग की स्थापना की और संपूर्ण भारत में होमरूल के लिए आंदोलन चलाया। कार्यक्रम की अध्यक्षा प्राचार्या डा. अनीता रानी ने कहा कि 1916 के लखनऊ अधिवेशन में कांग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच समझौता करवाने में तिलक ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

138. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 140th Birth Anniversary of great freedom fighter and Revolutionary Satyendra Nath Banerji on 29.07.2022 and delivered keynote address on "Satyendra Nath Banerji and His Contribution in Indian Freedom Struggle".

दैनिक भास्कर झज्जर भास्कर 30-07-2022

महान क्रांतिकारी सत्येन्द्रनाथ बोस की 140वीं जयंती मनाई

भास्कर न्यूज | झज्जर

आजादी का अमृत महोत्सव शृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महाविद्यालय प्राचार्या डॉ. अनीता फोगाट की अध्यक्षता में महान क्रांतिकारी सत्येन्द्रनाथ बोस की 140वीं जयंती के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप ने कहा कि खुदीराम बोस की राह पर चलने वाले सत्येंद्र नाथ बोस ने आजाद भारत के लिए अपना सर्वोच्च बलिदान दिया था। सत्येंद्रनाथ का जन्म 30 जुलाई 1882 को पश्चिम बंगाल, भारत के मिदनापुर जिले में हुआ था। सत्येंद्रनाथ प्रशिद्ध क्रांतिकारी अरबिंदो घोष के मामा थे। सत्येंद्रनाथ ने अनुशीलन समिति के सदस्य बनकर भारत को आजाद करवाने और ब्रिटिश अधिकारियों में डर पैदा करने के लिए अनेक

क्रांतिकारी गतिविधियों में शामिल हुए। भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में 1908 का अलीपुर बम घटना का मुख्य स्थान है। इस मामले के प्रमुख अभियुक्तों में अरबिंदो घोष, उनके भाई बारीन्द्र कुमार घोष और साथ ही अनुशीलन समिति के 38 अन्य बंगाली राष्ट्रवादी थे। 31 अगस्त 1908 को सत्येंद्रनाथ बोस और कन्हाइलाल दत्ता ने योजनाबद्ध तरीके से नरेन्द्रनाथ गोस्वामी की गोलियां मारकर हत्या कर दी और भागने का प्रयास करने की बजाय स्वयं को गिरफ्तार करवाया। इस कार्यक्रम की संरक्षिका प्राचार्या डॉ. अनीता रानी ने कहा कि नरेन्द्रनाथ गोस्वामी की हत्या के बाद मुख्य आरोपी अरबिंदो के खिलाफ मामला खत्म हो गया। परन्तु सत्येन्द्रनाथ बोस पर मुकद्मा चलाकर उसे 21 नवंबर 1908 को फांसी दे दी गई।

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 30.07.2022

अमृत महोत्सव के तहत बिरोहड़ कालेज में मनाई क्रांतिकारी सत्येंद्र नाथ बोस की जयंती

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में शुक्रवार को प्राचार्या डा. अनिता फौगाट की अध्यक्षता में क्रांतिकारी सत्येंद्र नाथ बोस की 140वीं जयंती के अवसर पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक डा. अमरदीप ने कहा कि खुदीराम बोस की राह पर चलने वाले सत्येंद्र नाथ बोस ने आजाद भारत के लिए अपना सर्वोच्च बलिदान दिया था। सत्येंद्र नाथ का जन्म 30 जुलाई 1882 को पश्चिम बंगाल मिदनापुर जिले में हुआ था। सत्येंद्र नाथ क्रांतिकारी अरबिंदो घोष के मामा थे। सत्येंद्र नाथ ने अनुशीलन समिति के सदस्य बनकर भारत को आजाद कराने और ब्रिटिश अधिकारियों में डर पैदा करने के लिए अनेक क्रांतिकारी गतिविधियों में शामिल भाग लिया। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में 1908 का अलीपुर बम घटना मुख्य है। इस मामले के प्रमुख अभियुक्तों में अरबिंदो घोष, उनके भाई बारिंद्र कुमार घोष और साथ ही अनुशीलन

क्रांतिकारी सत्येंद्र नाथ बोस जयंती कार्यक्रम को संबोधित करते डा. अमरदीप। ● विज्ञप्ति।

समिति के 38 अन्य बंगाली राष्ट्रवादी थे। उन्हें मुकदमे से पहले अलीपुर में प्रेसीडेंसी जेल में रखा गया था जहां नरेंद्र नाथ गोस्वामी सरकारी गवाह बन गया था और उसने बंगाल में क्रांतिकारी आंदोलन और क्रांतिकारियों की जानकारी ब्रिटिश हुकूमत को दे दी। सत्येंद्र नाथ बोस और कन्हाई लाल दत्ता ने सभी क्रांतिकारियों को बचाने एवं ब्रिटिश सरकार को सबक सिखाने के लिए नरेंद्र नाथ गोस्वामी की हत्या करने की योजना बनाई। 31 अगस्त 1908 को सत्येंद्र नाथ बोस और कन्हाई लाल दत्ता ने योजनाबद्ध तरीके से नरेंद्र नाथ गोस्वामी की गोलियां मारकर हत्या कर दी और भागने का प्रयास करने के बजाय अपनी गिरफ्तारी दे दी। सत्येंद्र नाथ बोस पर मुकदमा चलाकर उसे 21 नवंबर 1908 को फांसी दे दी गई।

दैनिक भास्कर

चरखी दादरी भास्कर 30-07-2022

सत्येंद्र नाथ बोस ने आजाद भारत के लिए दिया था अपना सर्वोच्च बलिदान

बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में बोस की 140वीं जयंती पर कार्यक्रम

भास्कर न्यूज़ | चरखी दादरी

गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में प्राचार्या डॉ. अनीता फौगाट की अध्यक्षता में क्रांतिकारी सत्येन्द्रनाथ बोस की 140वीं जयंती पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. अमरदीप ने कहा कि खुदीराम बोस की राह पर चलने वाले सत्येंद्र नाथ बोस ने आजाद भारत के लिए अपना सर्वोच्च बलिदान दिया था। सत्येंद्रनाथ का जन्म 30 जुलाई 1882 को पश्चिम बंगाल, भारत के मिदनापुर जिले में हुआ था। सत्येंद्रनाथ प्रसिद्ध क्रांतिकारी अरबिंदो घोष के मामा थे। सत्येंद्रनाथ ने अनुशीलन समिति के सदस्य बनकर भारत को आजाद करवाने और ब्रिटिश अधिकारियों में डर पैदा करने के लिए अनेक क्रांतिकारी गतिविधियों में शामिल हुए। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में 1908 का अलीपुर बम घटना का मुख्य स्थान है। इस मामले के प्रमुख अभियुक्तों में अरबिंदो घोष, उनके भाई बारीन्द्र कुमार घोष और साथ ही अनुशीलन समिति के 38 अन्य बंगाली राष्ट्रवादी थे। उन्हें मुकदमे से पहले अलीपुर में प्रेसीडेंसी जेल में रखा गया था, जहां नरेंद्रनाथ गोस्वामी सरकारी गवाह बन गया था और उसने बंगाल में क्रांतिकारी आन्दोलन और क्रांतिकारियों की सत्येंद्रनाथ बोस और कन्हाईलाल दत्ता ने सभी क्रांतिकारियों को बचाने एवं ब्रिटिश सरकार को सबक सिखाने के लिए नरेन्द्रनाथ गोस्वामी की हत्या करने की योजना बनाई।

139. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 82nd Martyrdom of great freedom fighter and Revolutionary Sardar Udham Singh on 31.07.2022 and delivered keynote address on "Revolutionary Movement in Abroad: Contribution of Sardar Udham Singh".

दैनिक भास्कर झज्जर भास्कर 31-07-2022

दैनिक भास्कर झज्जर

आजादी के अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में हुआ कार्यक्रम

महान क्रांतिकारी सरदार ऊधम सिंह का 82वां शहीदी दिवस मनाया

भास्कर न्यूज | झज्जर

आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महाविद्यालय प्राचार्या डॉ. अनीता फोगाट की अध्यक्षता में महान क्रांतिकारी सरदार ऊधम सिंह के 82वें शहीदी दिवस के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप ने कहा कि ऊधम सिंह ने लन्दन जाकर जनरल माइकल ओ' ड्वायर को मारकर जलियांबाला बाग नरसंहार का बदला लिया था। 26 दिसम्बर 1899 को जन्में ऊधम सिंह ने बचपन में ही अपने माता पिता को खो दिया था और उनका पालन पोषण एक अनाथालय में हुआ परन्तु प्रारम्भ से ही वह हर भारतीय की तरह आजादी का स्वप्न देखता था। भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में जलियांबाला बाग नरसंहार ने एक बड़ा परिवर्तन किया।इस घटना ने हजारों-लाखों की संख्या में युवाओं को क्रांतिकारी आन्दोलन की तरफ मोड़ा। ऊधम सिंह भी उनमें से एक था जिसने जलियांबाला बाग की मिट्टी हाथ में लेकर इस नरसंहार के जिम्मेदार जनरल डायर और तत्कालीन पंजाब के गर्वनर माइकल ओ' ड्वायर को सबक सिखाने की प्रतिज्ञा ली थी।

शहीद उधम सिंह के बारे में विचार व्यक्त करते हुए।

1924 में ऊधम सिंह गदर पार्टी में शामिल हो गए थे : 1924 में ऊधम सिंह गदर पार्टी में शामिल हो गए और औपनिवेशिक शासन को उखाड़ फेंकने के लिए विदेशों में भारतीयों को संगठित करने लगे। 1927 में वह भारत लौटे और अपने साथ कई क्रांतिकारी एवं और गोला-बारूद लाए परन्तु जल्द ही उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और 1931 में जेल से छुटे। 1934 में जर्मनी होते हुए इंग्लैंड पहुच गए और गवर्नर माइकल ओ डायर को मारने के लिए योजना बनाने लगे। वहीं पर 13 मार्च 1940 को रॉयल सेंट्रल एशियन सोसायटी की लंदन के काक्सटन हॉल की मीटिंग में जहां माइकल ओ' डायर भाषण दे रहे थे तब ऊधम सिंह ने अपनी किताब में पिस्तौल छिपाकर अंदर ले गए और जनरल डायर को दो गोलियां मारी जिससे उसकी तुरंत मौत हो गई।

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 31.07.2022

आजादी के अमृत महोत्सव के तहत क्रांतिकारी सरदार उधम सिंह का 82 वां बलिदान दिवस मनाया

आजादी का अमृत महोत्सव के तहत क्रांतिकारी सरदार उध

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में प्राचार्या डा. अनिता फौगाट की अध्यक्षता में क्रांतिकारी सरदार उधम सिंह के 82वें बलिदान दिवस पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक डा. अमरदीप ने कहा कि उधम सिंह ने लंदन जाकर जनरल माइकल डायर को मारकर जलियांवाला बाग नरसंहार का बदला लिया था। 26 दिसंबर 1899 को जन्मे उधम सिंह ने बचपन में ही अपने माता पिता को खो दिया था और उनका पालन पोषण एक अनाथालय में हुआ। लेकिन प्रारंभ से ही वह हर भारतीय की तरह आजादी का स्वप्न देखता था। भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में जलियांवाला बाग नरसंहार ने एक बड़ा परिवर्तन किया। इस घटना ने हजारों लाखों की संख्या में युवाओं को क्रांतिकारी आंदोलन की तरफ मोड़ा। उधम सिंह भी उनमें से एक था जिसने जलियांवाला बाग की मिट्टी हाथ में लेकर इस नरसंहार के जिम्मेदार जनरल डायर और तत्कालीन पंजाब के गवर्नर माइकल डायर को सबक सिखाने की प्रतिज्ञा ली थी। 1924 में उधम सिंह गदर पार्टी में शामिल हो गए और औपनिवेशिक शासन को उखाड़ फेंकने के लिए विदेशों में भारतीयों को संगठित करने लगे। 1927 में वह भारत लौटे और अपने साथ अनेक क्रांतिकारी एवं और गोला बारूद लाए लेकिन जल्द ही उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और 1931 में जेल से छूटे। 1934 में जर्मनी होते हुए इंग्लैंड पहुंच गए और गवर्नर माइकल डायर को मारने के लिए योजना बनाने लगे। वहीं पर 13 मार्च 1940 को रायल सेंट्रल एशियन सोसाइटी की लंदन के काक्सटन हाल की बैठक में जहां माइकल डायर भाषण दे रहे थे तब उधम सिंह अपनी किताब में पिस्तौल छिपाकर अंदर ले गए और जनरल डायर को दो गोलियां मारी। जिससे उसकी मौत हो गई। कार्यक्रम की अध्यक्ष डा. अनिता रानी ने भी सरदार उधम सिंह को नमन किया।

गांव बिरोहड़ के सरकारी कालेज में सरदार उधम सिंह के बारे में बताते डा. अमरदीप। ● विज्ञप्ति

♦♦♦♦♦♦

140. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 146th Birth Anniversary of great freedom fighter and designer of Tiranga Pingli Vainkaiya on 02.08.2022 and delivered keynote address on "History of National Flag Tiranga and Role of Pingli Vainkaiya".

अमर उजाला, झज्जर 03.08.2022

'तिरंगे के प्रारूपकार का सदैव ऋणी रहेगा राष्ट्र'

पिंगली वेंकैया की जयंती पर विस्तृत व्याख्यान का हुआ आयोजन

संवाद न्यूज एजेंसी

पिंगली वेंकैया की जयंती पर हुआ विस्तृत व्याख्यान। संवाद

साल्हावास। आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महाविद्यालय प्राचार्या डॉ. अनीता फोगाट की अध्यक्षता में महान स्वतंत्रता सेनानी पिंगली वेंकैया की 146 वीं जयंती के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप ने कहा कि राष्ट्र ध्वज के प्रारूपकार पिंगली वेंकैया का राष्ट्र सदैव ऋणी रहेगा। पिंगली वेंकैया का जन्म 2 अगस्त 1876, को वर्तमान आंध्र प्रदेश के मछलीपट्टनम के निकट भटलापेनुमारु नामक स्थान पर हुआ था। वह एक किसान, एक भूविज्ञानी, मछलीपट्टनम में आंध्र नेशनल कॉलेज में एक व्याख्याता और जापानी भाषा के एक धाराप्रवाह वक्ता थे। वह इतना धाराप्रवाह थे कि वह जापान वेंकैया के नाम से प्रसिद्ध थे। इससे पूर्व पिंगली ने ब्रिटिश भारतीय सेना में भी सेवा की और दक्षिण अफ्रीका के एंग्लो-बोअर युद्ध में भाग लिया था। यहीं यह महात्मा गांधी के संपर्क में आये और उनकी विचारधारा से बहुत प्रभावित हुए। वेंकैया के प्रयासों से भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के राष्ट्रीय अधिवेशनों में राष्ट्रध्वज होने की आवश्यकता को बल मिला। राष्ट्रध्वज के डिजाइन तैयार करने के लिए पिंगली वेंकैया ने पांच सालों तक तीस विभिन्न देशों के राष्ट्रीय ध्वजों पर शोध किया। 1921 में विजयवाड़ा में आयोजित भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन में वेंकैया महात्मा गांधी से मिले और उन्हें अपने द्वारा डिजाइन लाल और हरे रंग से बनाया हुआ झंडा दिखाया। महात्मा गाँधी के सुझाव पर पिंगली में इसमें सफेद रंग की पट्टी लगाई जिससे 1931 में कांग्रेस ने कराची के अखिल भारतीय सम्मेलन में केसरिया, सफेद और हरे तीन रंगों से बने इस ध्वज को सर्वसम्मति से स्वीकार किया। बाद में राष्ट्रीय ध्वज में इस तिरंगे के बीच चरखे की जगह अशोक चक्र ने ले ली। कार्यक्रम की अध्यक्षा डॉ. अनीता फोगाट ने कहा कि वर्तमान तिरंगे की यात्रा देशभक्ति की भावना से ओतप्रोत रही है। आजादी के आंदोलन में राष्ट्रध्वज के आन-बान-शान के लिए असंख्य देशभक्तों ने अपने प्राणों की आहुति दे दी थी। राष्ट्र की उन्नति के लिए देशवासियों में राष्ट्रप्रेम का संचार करने के लिए भारत सरकार द्वारा 'हर घर तिरंगा' कार्यक्रम की शुरुआत की गई है। इसके माध्यम से हम पिंगली वेंकैया के कार्य एवं संघर्ष की सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित कर सकेंगे। इस अवसर पर सवीन और राजेश कुमार इत्यादि प्रोफेसर उपस्थित रहे।

अमर उजाला, चरखी दादरी 03.08.2022

कार्यक्रम — आजादी का अमृत महोत्सव के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में महान स्वतंत्रता सेनानी पिंगली वेंकैया की जयंती मनाई

'राष्ट्रध्वज की शान के लिए देशभक्तों ने दी कुर्बानियां'

संवाद न्यूज एजेंसी

चरखी दादरी। आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में हरियाणा इतिहास कांग्रेस के तत्वावधान में 135 वां कार्यक्रम आयोजित किया गया। महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. अनीता फोगाट की अध्यक्षता में महान स्वतंत्रता सेनानी पिंगली वेंकैया की 146 वीं जयंती पर उन्हें नमन किया गया।

कार्यक्रम अध्यक्ष डॉ. अनीता फोगाट ने कहा कि आजादी के आंदोलन में राष्ट्रध्वज की आन-बान-शान के लिए असंख्य देशभक्तों ने अपने प्राणों की आहुति दी थी। राष्ट्र की उन्नति के लिए देशवासियों में राष्ट्र प्रेम का संचार करने के लिए भारत सरकार द्वारा हर घर तिरंगा कार्यक्रम की शुरुआत की गई है। इसके तहत हम पिंगली वेंकैया के कार्य एवं संघर्ष को सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित कर सकेंगे। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. अमरदीप ने कहा कि राष्ट्र ध्वज के लिए पिंगली वेंकैया का राष्ट्र सदैव ऋणी रहेगा। इस अवसर पर सबीन और राजेश कुमार उपस्थित रहे।

राजकीय कॉलेज बिरोहड़ में छात्रों को संबोधित करते हुए प्राचार्य डॉ.अनीता। संवाद

विद्यार्थियों को बताया राष्ट्रीय ध्वज का महत्व

चरखी दादरी। गांव सरूपगढ़- सांतोर स्थित राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में हर घर तिरंगा अभियान की शुरुआत की गई। प्राचार्य जोगेंद्र गुलिया ने कहा कि इस अभियान से देश के लोगों में राष्ट्रीय एकता की भावना का विकास होगा। इतिहास प्रवक्ता रोकी ने कहा कि संसार में जितने भी देश हैं उन सबका अपना ध्वज है। प्रवक्ता बिजेंद्र बिरोहड़ ने कहा कि तिरंगा झंडा बनाने का श्रेय पिंगली वेंकैया को जाता है। इस अवसर पर कृष्ण कौशिक, मुकेश राजोलिया, रविंद्र, प्रवीन सैनी, नवदीप, जय सिंह, अश्वनी, नीरुद्दीन, रुचिका, प्रवीन, संगीता, ललिता, स्नेह, सुरेश बाला, अश्वनी आदि मौजूद रहे। संवाद

स्कूल में छात्रों को तिरंगा का महत्व बताते शिक्षक। संवाद

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 03.08.2022

स्वतंत्रता सेनानी पिंगली वेंकैया की 146वीं जयंती पर कार्यक्रम आयोजित

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महाविद्यालय प्राचार्या डा. अनीता फोगाट की अध्यक्षता में महान स्वतंत्रता सेनानी पिंगली वेंकैया के 146 वीं जयंती के अवसर पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें संयोजक एवं मुख्य वक्ता डा. अमरदीप ने कहा कि राष्ट्र ध्वज के प्रारूपकार पिंगली वेंकैया का राष्ट्र सदैव ऋणी रहेगा।

पिंगली ने ब्रिटिश भारतीय सेना में भी सेवा की और दक्षिण अफ्रीका के एंग्लो-बोअर युद्ध में भाग लिया था। यहीं वह महात्मा गांधी के संपर्क में आये और उनकी विचारधारा से बहुत प्रभावित हुए। राष्ट्रध्वज के डिजाइन तैयार करने के लिए पिंगली वेंकैया ने पांच सालों तक 30 विभिन्न देशों के राष्ट्रीय ध्वजों पर शोध किया। 1921 में विजयवाड़ा में आयोजित भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन में वेंकैया पिंगली महात्मा गांधी से मिले और उन्हें अपने द्वारा डिजाइन लाल और हरे रंग से बनाया हुआ झंडा दिखाया।

महात्मा गांधी के सुझाव पर इसमें सफेद रंग की पट्टी लगाई जिससे 1931 में कांग्रेस ने कराची के अखिल भारतीय सम्मेलन में केसरिया, सफेद और हरे तीन रंगों से बने इस ध्वज को सर्वसम्मति से स्वीकार किया। बाद में राष्ट्रीय ध्वज में इस तिरंगे के बीच चरखे की जगह अशोक चक्र ने ले ली। कार्यक्रम की अध्यक्षा डा. अनीता फोगाट ने कहा कि वर्तमान तिरंगे की यात्रा देशभक्ति की भावना से ओतप्रोत रही है। इस अवसर पर सबीन और राजेश कुमार इत्यादि प्रोफेसर उपस्थित रहे।

141. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 80th Birth Anniversary of Quit India Movement or August Revolution on 08.08.2022 and delivered keynote address on "August Revolution: Arriving Independence from British Imperialism".

अमर उजाला, झज्जर 09.08.2022

भारत छोड़ो आंदोलन की वर्षगांठ मनाई

'महात्मा गांधी की एक आवाज पर नौजवानों ने अंग्रेजों को दी थी टक्कर'

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हवास। आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में भारत छोड़ो आंदोलन की 80वीं वर्षगांठ के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप ने कहा कि करो या मरो का नारा देकर महात्मा गांधी ने आजादी की अलख जगाई थी। अहिंसा के सबसे पुजारी महात्मा गांधी ने भी भारतीय आंदोलनकारियों को आजादी के लिए सर्वोच्च बलिदान देने के लिए तत्पर रहने का संदेश दिया। 8 अगस्त 1942 में बंबई के ग्वालियर टैंक मैदान में महात्मा गांधी ने ब्रिटिश हुकूमत को चेतावनी दी कि अब भारत गुलामी की बेड़ियों को तोड़ देगा। दूसरे विश्व युद्ध के दौरान भारतीय जनता से सलाह किए बिना भारत को युद्धग्रस्त देश घोषित कर दिया जिसका पूरे देश में पुरजोर विरोध हुआ।

इस विरोध का समाधान ब्रिटिश हुकूमत ने मन मारकर किया जिसके परिणामस्वरूप क्रिप्स मिशन असफल हो गया। इससे स्पष्ट था कि ब्रितानिया सरकार भारत को कोई अधिकार नहीं देना चाहती थी। इसलिए भारतीय जनता ने भी

राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में व्याख्यान देते वक्ता। संवाद

अपनी कमर कस ली और महात्मा गांधी की एक आवाज ''करो या मरो, अभी नहीं तो कभी नही'' पर खड़े होकर पुरजोर ब्रिटिश सरकार से टक्कर लेने चल पड़े।

8 अगस्त को आंदोलन शुरू हुआ और 8-9 अगस्त की रात से अंग्रेजी सरकार ने ऑपरेशन जीरो ऑवर के तहत दिन निकलने से पहले ही कांग्रेस वर्किंग कमेटी के सभी सदस्य, महात्मा गांधी समेत गिरफ्तार हो चुके थे और कांग्रेस को गैरकानूनी संस्था घोषित कर दिया गया था। यही नहीं अंग्रेजों ने गांधी जी को अहमदनगर किले में नजरबंद कर दिया। सरकारी आंकड़ों के अनुसार इस जनांदोलन में 940 लोग मारे गए थे और 1630 घायल हुए थे जबकि 60229 लोगों ने गिरफ्तारी दी थी। कार्यक्रम की अध्यक्षा डॉ. अनीता फोगाट ने कहा कि हालांकि अंग्रेजों के क्रूर दमन के बावजूद भी आंदोलन रुकने की बजाय तेज हुआ और जनता ने ब्रिटिश शासन के प्रतीकों के खिलाफ प्रदर्शन करने सड़कों पर निकल पड़े।

उन्होंने सरकारी इमारतों पर कांग्रेस के झंडे फहराने शुरू कर दिये। इस आंदोलन के दौरान ही डॉ. राम मनोहर लोहिया, जय प्रकाश नारायण और अरुणा आसफ अली जैसे नेता उभर कर सामने आये। जिन्होंने आंदोलन को नई ऊंचाई तक पहुंचाया। इस आंदोलन ने भारतीय आजादी को नजदीक ला दिया, जिसके लिए असंख्य लोगों ने बलिदान दिए थे। इस अवसर पर डॉ. नरेंद्र सिंह और पवन कुमार इत्यादि प्रोफेसर उपस्थित रहे।

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 09.08.2022

भारत छोड़ो आंदोलन की 80वीं वर्षगांठ पर गांधी को किया याद

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में प्राचार्या डा. अनिता फौगाट की अध्यक्षता में भारत छोड़ो आंदोलन की 80वीं वर्षगांठ के अवसर पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक डा. अमरदीप ने कहा कि करो या मरो का नारा देकर महात्मा गांधी ने आजादी की अलख जगाई थी। अहिंसा के पुजारी गांधी ने भी 8 अगस्त 1942 में मुम्बई के ग्वालियर टैंक मैदान में

बिरोहड़ सरकारी कालेज में भारत छोड़ो आंदोलन के बारे में बताते डा. अमरदीप। ● विज्ञप्ति।

ब्रिटिश हुकूमत को चेताया कि अब भारत गुलामी की बेड़ियों को तोड़ देगा। दूसरे विश्व युद्ध के दौरान भारतीय जनता से सलाह किए बिना भारत को युद्धग्रस्त देश घोषित कर दिया गया। जिसका पूरे देश में पुरजोर विरोध हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्ष डा. अनिता ने कहा कि अंग्रेजों के क्रूर दमन के बावजूद भी आंदोलन रुकने के बजाय तेज हुआ और जनता ब्रिटिश शासन के प्रतीकों के खिलाफ प्रदर्शन करने सड़कों पर निकल पड़ी। सरकारी इमारतों पर कांग्रेस के झंडे फहराने शुरू कर दिए। इस आंदोलन के दौरान ही डा. राम मनोहर लोहिया, जयप्रकाश नारायण और अरुणा आसफ अली जैसे नेता उभर कर सामने आए। इस दौरान डा. नरेंद्र सिंह और पवन कुमार ने भी विचार रखे।

142. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 114th Martyrdom of great freedom fighter and Revolutionary Khudiram Bose on 10.08.2022 and delivered keynote address on "Untold Saga of Khudiram Bose and Inspiration to Youth of Independent India".

अमर उजाला, झज्जर 11.08.2022

नमन

खुदीराम बोस की याद में किया पौधरोपण

'बोस सबसे कम उम्र में फांसी का फंदा चूमने वाले क्रांतिकारी'

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास। आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोतर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में प्राचार्या डॉ. अनीता फोगाट की अध्यक्षता में महान स्वतंत्रता सेनानी एवं क्रांतिकारी खुदीराम बोस के 114 वें शहीदी दिवस पर एक विशेष पौधारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर डॉ. अमरदीप, पवन कुमार इत्यादि ने त्रिवेणी लगाई।

इस कार्यक्रम के संयोजक डॉ. अमरदीप ने कहा कि आजादी के आन्दोलन में खुदीराम बोस जैसे नवयुवकों ने अपना सर्वोच्च बलिदान देकर इतिहास रच दिया था। खुदीराम बोस का जन्म 3 दिसम्बर 1889 को पश्चिम बंगाल के मिदनापुर में हुआ था। 15 वर्ष की

राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में स्वतंत्रता सेनानी एवं क्रांतिकारी खुदीराम बोस के 114वें शहीदी दिवस पर पौधरोपण करते स्टाफ सदस्य। संवाद

आयु में 1904 में अनुशीलन समिति के क्रांतिकारी सदस्य बने। 1905 में बंगाल विभाजन ने पूरे देश में क्रांतिकारी आंदोलन को नई गति दी। उन्होंने वंदे मातरम पैंफलेट्स बांटने की महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। शीघ्र ही खुदीराम बोस ने बम बनाना सीख लिया था और स्वराज के संघर्ष करने लगे। 1908 में खुदीराम बोस और प्रफुल्ल चाकी को मुजफ्फरपुर के कुख्यात जिला मजिस्ट्रेट किंग्सफोर्ड की हत्या का काम सौंपा गया।

किंग्सफोर्ड भारतीय युवाओं को कठोर से कठोर सजायें मामूली से मुकदमों में देता था। 30 अप्रैल 1908 को खुदीराम बोस और उनके साथी ने किंग्सफोर्ड की बग्घी समझकर उस पर बम फेंका, परंतु दुर्भाग्य से उसमें भारतीय समर्थक दूसरे अंग्रेज अधिकारी की पत्नी एवं बेटी स्वर थी और उनकी मौत हो गई। दोनों क्रांतिकारी यह सोचकर भाग निकले कि किंग्सफोर्ड मारा गया है। खुदीराम बोस को वैनी रेलवे स्टेशन पर गिरफ्तार कर लिया जबकि प्रफुल्ल चाकी ने चंद्रशेखर आजाद जैसी शहादत दी। 13 जून 1908 को इस मामले में खुदीराम बोस को फांसी की सजा सुनाई गई तो उनके चेहरे पर कोई शिकन नहीं, बल्कि विजय एवं शहादत का आनंद था। कार्यक्रम की अध्यक्षा डॉ. अनीता फोगाट ने कहा कि खुदीराम बोस सबसे कम उम्र में फांसी के फंदे को चूमने वाले क्रांतिकारी थे, उनके बलिदान ने लाखों युवाओं को देश पर शहीद होने की प्रेरणा दी।

इसलिए आज उनके बलिदान दिवस पर युवाओं को जाग्रत करने के लिए यह कार्यक्रम आयोजित किया और उनके बलिदान को याद में त्रिवेणी लगाई गई। इस विशेष कार्यक्रम को सफल बनाने में प्रोफेसर पवन कुमार, अमरदीप और पवन चौकीदार ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

143. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 75th Death Anniversary of great freedom fighter and Revolutionary Sardar Ajit Singh on 14.08.2022 and delivered keynote address on "Sardar Ajit Singh and Revolutionary Movement in Punjab".

jhajjarabhitaklive.com/2022/08/14/haryana-abhitak-news-14-08-22/

Haryana Abhitak News 14/08/22

झज्जर हरियाणा एनसीआर चंडीगढ़ राजनीति

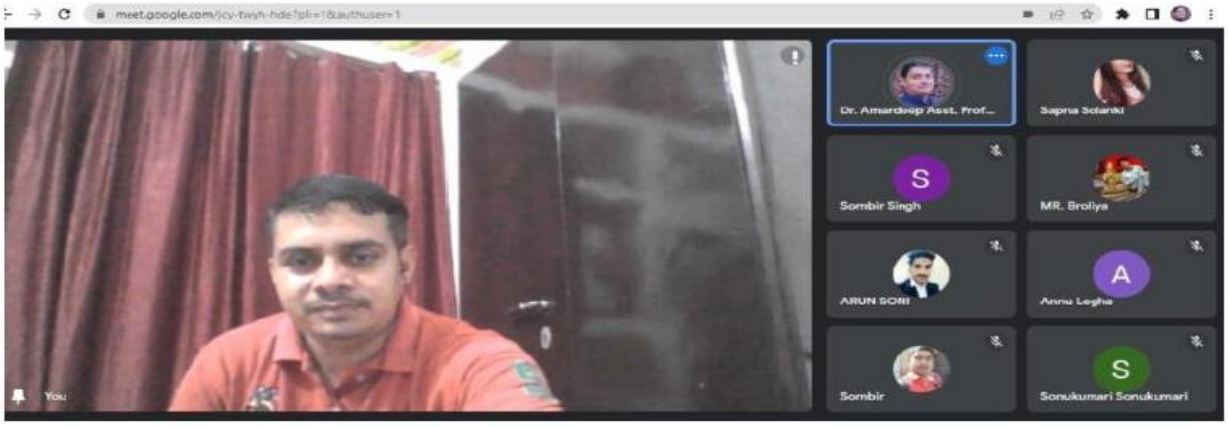

सरदार अजीत सिंह ने पंजाब में क्रांतिकारी आन्दोलन की नींव रखी : डा. अमरदीप

झज्जर, 14 अगस्त (अभीतक) : रविवार को आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महान क्रांतिकारी सरदार अजीत सिंह की 75 वीं पुण्यतिथि के अवसर पर एक विशेष ऑनलाइन कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डा. अमरदीप ने कहा कि सरदार अजीत सिंह ने पंजाब में क्रांतिकारी आन्दोलन की नींव रखी जिसमें भगत सिंह, सुखदेव, भगवती चरण वोहरा जैसे असंख्य अनेक क्रांतिकारी हुए जिन्होंने ब्रिटिश हुकूमत को हिला दिया था। भगत सिंह के पिता सरदार किशन सिंह और चाचा सरदार अजीत सिंह दोनों ही पहली पीढ़ी के क्रांतिकारी थे जिन्होंने अंग्रेजी सरकार को कड़ी टक्कर दी और इसी कारण अंग्रेजी सरकार ने तीन कुख्यात कृषि कानून 1907 में वापिस लेने पड़े जिन कानूनों के द्वारा किसानों से उनकी जमीन में पेड़ काटने और रहने तक की भी मनाही थी। ऐसे महान सेनानी अजीत सिंह का जन्म 23 फरवरी 1881 को पंजाब के जालंधर के खटकड़ कलां गांव में हुआ था। उन्होंने अपनी शुरुआती पढ़ाई जालंधर से करने के बाद बरेली के लॉ कॉलेज से आगे की पढ़ाई की और पढ़ाई के दौरान ही वह भारत के स्वाधीनता संग्राम में सक्रिय रूप से शामिल हो गए और अपनी कानून की पढ़ाई को बीच में ही छोड़ दिया। किशन सिंह और अजीत सिंह ने भारत माता सोसाइटी की स्थापना की और अंग्रेज विरोधी किताबें छापनी शुरू कर दीं। 1907 में अंग्रेज सरकार के किसान विरोधी कानूनों के खिलाफ मजबूत आन्दोलन चलाया और जगह जगह जनसभाएं करके उन्होंने पंजाब के किसानों को एकजुट किया और इन सभाओं में लाला लापजत राय को भी बुलाया गया। इस एक साल के दौरान सरदार अजीत सिंह के भाषणों की गूंज अंग्रेजी हुकूमत के कानों में चुभने लगी थी और उन्होंने 21 अप्रैल 1907 को अजीत सिंह को गिरफ्तार कर लिया मिल ही गया। लाला लाजपत राय और अजीत सिंह को छह महीने के लिए बर्मा की मांडले जेल में निर्वासित कर दिया गया। मांडले जेल से रिहा होने पर घर आये उस समय तक भगत सिंह का जन्म हो चूका था। परन्तु जब पंजाब में क्रांतिकारी गतिविधियाँ करना मुश्किल हो गया तो अजीत सिंह ने विदेश में जाकर इस आन्दोलन को दुसरे तरीके से मजबूत करने का प्रयास किया और 1909 में अपने साथी क्रांतिकारी सूफी अंबा प्रसाद के साथ ईरान चले गए। ईरान से इटली, फ्रांस, जर्मनी, ब्राजील, अमेरिका इत्यादि में घूम-घूमकर क्रांतिकारियों को संगठित किया। उन्होंने गदर आन्दोलन और मैडम भिकाजी कामा के साथ भी कार्य किया। 1939 में यूरोप लौटने के बाद उन्होंने इटली में सुभाष चंद्र बोस की भी मदद की। कार्यक्रम की अध्यक्षा डा. अनीता फोगाट ने कहा कि क्रांतिकारियों और स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान से जब भारत की आजादी की राह साफ होने लगी तो मार्च 1947 में सरदार अजीत सिंह भारत लौट आये। कुछ समय तक दिल्ली में रहने के बाद वह हिमाचल प्रदेश के डलहौजी चले गए। 14-15 अगस्त 1947 की रात को जवाहरलाल नेहरु का रेडियो पर भाषण सुनकर उन्होंने कहा था कि अब हमारा कार्य पूर्ण हो गया है और 15 अगस्त 1947 की सुबह 4 बजे उन्होंने प्राण त्याग दिए। आज भारत की आजादी के साथ साथ सरदार अजीत सिंह की भी 75 वीं वर्षगांठ है, दोनों का सम्बन्ध अटूट है।

144. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 75th Independence Day on 15.08.2022 and delivered keynote address on "The Idea of Independence: 1947".

अमर उजाला, चरखी दादरी, 17.08.2022

न्यूज डायरी

राजकीय महाविद्यालय में किया ध्वजारोहण

चरखी दादरी। बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में स्वतंत्रता दिवस पर प्राचार्या डॉ. अनीता फौगाट ने ध्वजारोहण किया। कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप ने कहा कि भारत की आजादी के लिए देशभक्तों ने असंख्य कुर्बानियां दी हैं। डॉ. अनीता फौगाट ने कहा कि आजादी की लड़ाई लंबी थी, लेकिन हमारे सेनानियों ने कभी हार नहीं मानी। आज हमारा और विशेषकर युवाओं का कर्तव्य है कि वे आजादी पर किसी प्रकार की आंच ने आने दें। संवाद

145. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 73rd Death Anniversary of great freedom fighter and Revolutionary Pulin Bihari Das on 17.08.2022 and delivered keynote address on "Life and struggle of Pulin Bihari Das".

दैनिक भास्कर झज्जर भास्कर 18-08-2022

पुलिन बिहारी दास ने बंगाल के क्रांतिकारी आंदोलन में निभाई थी महत्वपूर्ण भूमिका

बिरोहड़ गांव के सरकारी में क्रांतिकारी पर विचार व्यक्त करते वक्ता।

झज्जर | बिरोहड़ गांव के राजकीय महाविद्यालय के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में प्राचार्या डॉ. अनीता फोगाट की अध्यक्षता में महान क्रांतिकारी पुलिन बिहारी दास की 73वीं पुण्यतिथि के अवसर पर कार्यक्रम किया गया। मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप ने कहा कि पुलिन बिहारी दास ने बंगाल के क्रांतिकारी आन्दोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। कुख्यात जज बासिल कोप्लेस्टन एलन पर गोली चलाकर क्रांति का आगाज किया था। 24 जनवरी 1877 को बंगाल के फरीदपुर जिले में लोन सिंह गांव में जन्में पुलिन बिहारी दास ने प्रारम्भिक शिक्षा फ़रीदपुर जिला स्कूल व उच्च शिक्षा के लिए ढाका कॉलेज में प्रवेश लिया। 1906 इनकी मुलाकत बिपिन चन्द्र पाल और प्रमथ नाथ मित्र से हुई थी।

बताया ... ाइबर
कई ऐसे ... न पर
नहीं बा...

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 18.08.2022

अमृत महोत्सव के तहत बिरोहड़ सरकारी कालेज में क्रांतिकारी पुलिन बिहारी दास को किया याद

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में प्राचार्या डा. अनिता फौगाट की अध्यक्षता में क्रांतिकारी पुलिन बिहारी दास की 73वीं पुण्य तिथि के अवसर पर कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक डा. अमरदीप ने कहा कि पुलिन बिहारी दास ने बंगाल के क्रांतिकारी आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी और कुख्यात जज बासिल कोप्लेस्टन एलन पर गोली चलाकर क्रांति का आगाज किया था। 24 जनवरी 1877 को बंगाल के फरीदपुर जिले में लोनसिंह गांव में जन्मे पुलिन बिहारी दास ने प्रारंभिक शिक्षा फरीदपुर जिला स्कूल एवं उच्च शिक्षा के लिए ढाका कालेज में प्रवेश लिया। 1906 में इनकी मुलाकात बिपिनचंद्र पाल और प्रमथ नाथ मित्र से हुई। उन्होंने पुलिन दास को अनुशीलन समिति की ढाका इकाई का संगठन करने का दायित्व भी सौंपा। अक्टूबर में उन्होंने 80 युवाओं के साथ ढाका अनुशीलन समिति की स्थापना की। सन 1908 में क्रांतिकारी आंदोलन को गति देने के लिए उन्होंने बारा के अंग्रेज समर्थक जमींदार की हवेली पर डकैती की। इस डकैती के परिणामस्वरूप अंग्रेज सरकार ने पुलिन बिहारी दास को भूपेश चंद्र नाग, श्यामसुंदर चक्रवर्ती, कृष्ण कुमार मित्र, सुबोध मलिक और अश्विनी कुमार दत्त के साथ गिरफ्तार कर लिया गया। पुलिन बिहारी दास का 17 अगस्त 1949 को कलकत्ता में निधन हो गया।

गांव बिरोहड़ के सरकारी कालेज में क्रांतिकारी पुलिन बिहारी दास के बारे में बताते प्रो. अमरदीप। ● विज्ञप्ति

146. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special tree plantation drive on 135th Birth Anniversary of great freedom fighter S. Satyamurti on 20.08.2022 and delivered keynote address on "Contribution of S. Satyamurti in Indian Freedom Struggle".

दैनिक भास्कर झज्जर भास्कर 21-08-2022

स्वतंत्रता सेनानी एस सत्यमूर्ति के 135वें जन्मदिवस पर पौधरोपण कार्यक्रम हुआ

अमृत महोत्सव शृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में हुआ कार्यक्रम

भास्कर न्यूज | झज्जर

आजादी का अमृत महोत्सव शृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में प्राचार्या डॉ. अनीता फोगाट की अध्यक्षता में महान स्वतंत्रता सेनानी एस सत्यमूर्ति के 135वें जन्मदिवस पर पौधरोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर डॉ. अमरदीप, डॉ. नरेंद्र सिंह, ओमबीर इत्यादि ने त्रिवेणी लगाई।

इस कार्यक्रम के संयोजक डॉ. अमरदीप ने कहा कि एस सत्यमूर्ति ने सविनय अवज्ञा और भारत छोड़ो आन्दोलन में उल्लेखनीय भूमिका निभाई थी। 19 अगस्त 1887 को थिरुमयम, मद्रास प्रेसीडेंसी, ब्रिटिश भारत में जन्मे एस सत्यमूर्ति ने पुहुकोट्टा महाराजा कॉलेज से इंटरमीडिएट पूरा किया और फिर 1906 में मद्रास क्रिश्चियन कॉलेज से बीए इतिहास की परीक्षा पास की।

पौधारोपण कार्यक्रम में शामिल कॉलेज।

इसके बाद कानून की पढ़ाई और बाद में वकालत की। उनका राजनीतिक जीवन 1919 में शुरू हुआ था जब उन्हें कांग्रेस प्रतिनिधिमंडल का सचिव बनाया गया था जो मोंटेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधारों एवं रॉलेट एक्ट का विरोध करने के लिए इंग्लैंड में संयुक्त संसदीय समिति के पास गया था। 1926 में, उन्हें ब्रिटिश जनता के सामने भारतीय दृष्टिकोण प्रस्तुत करने के लिए फिर से इंग्लैंड भेजा गया। 1930 में उन्हें मद्रास में पार्थसारथी मंदिर के ऊपर भारतीय ध्वज फहराने के आरोप में गिरफ्तार किया गया था। चितरंजन दास और मोतीलाल नेहरू के साथ व उन प्रमुख स्वराज वादियों में से एक थे जिन्होंने भारत में संसदीय लोकतंत्र की आधारशिला रखी थी। कार्यक्रम की अध्यक्ष डॉ. अनीता फोगाट ने कहा कि 1940 में व्यक्तिगत सत्याग्रह में भाग लेने के बाद उन्हें आठ महीने की अवधि के लिए फिर से गिरफ्तार कर लिया गया और जेल में डाल दिया गया।

अमर उजाला, झज्जर 21.08.2022

छात्र–शिक्षकों ने पौधारोपण किया

सात्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोतर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महान स्वतंत्रता सेनानी एस सत्यमूर्ति के 135 वें जन्मदिवस पर विशेष वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। डॉ अमरदीप, डॉ नरेंद्र सिंह, ओमबीर ने त्रिवेणी लगाई। कार्यक्रम के संयोजक डॉ अमरदीप ने कहा कि एस सत्यमूर्ति ने सविनय अवज्ञा और भारत छोड़ो आंदोलन में उल्लेखनीय भूमिका निभाई थी। 19 अगस्त 1887 को थिरुमयम, मद्रास प्रेसीडेंसी, ब्रिटिश भारत में जन्मे एस सत्यमूर्ति ने 1906 में मद्रास क्रिश्चियन कॉलेज से बीए इतिहास की परीक्षा पास की। इसके बाद कानून की पढ़ाई और बाद में वकालत की। उनका राजनीतिक जीवन 1919 में शुरू हुआ था जब उन्हें कांग्रेस प्रतिनिधिमंडल का सचिव बनाया गया। 1930 में उन्हें मद्रास में पार्थसारथी मंदिर के ऊपर भारतीय ध्वज फहराने के आरोप में गिरफ्तार किया गया था। संवाद

अध्यापकों के तबादले होने शुरू हुए मनोज सिंह, कर्मवीर सिंह, महेंद्र रेशनेलाइजेशन सिस्टम से गांव आयोजित रोष पंचायत को संबोधित

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 21.08.2022

छात्र, शिक्षकों ने स्वतंत्रता सेनानी एस सत्यमूर्ति को किया याद

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : गांव बिरोहड़ स्थित सरकारी कालेज में स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में प्राचार्या डा. अनीता फौगाट की अध्यक्षता में स्वतंत्रता सेनानी एस सत्यमूर्ति के 135 वें जन्मदिवस पर पौधारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर डा. अमरदीप, डा. नरेंद्र सिंह, ओमबीर इत्यादि ने त्रिवेणी लगाई। इस कार्यक्रम के संयोजक डा. अमरदीप ने कहा कि एस सत्यमूर्ति ने सविनय अवज्ञा और भारत छोड़ो आंदोलन में उल्लेखनीय भूमिका निभाई थी। 19 अगस्त 1887 को थिरुमयम, मद्रास प्रेसीडेंसी, ब्रिटिश भारत में जन्मे एस सत्यमूर्ति ने पुडुकोट्टा महाराजा कालेज से इंटरमीडिएट पूरा किया और फिर 1906 में मद्रास क्रिश्चियन कालेज से बीए इतिहास की परीक्षा पास की। इसके बाद कानून की पढ़ाई और बाद में वकालत की। उनका राजनीतिक जीवन 1919 में शुरू हुआ था जब उन्हें कांग्रेस प्रतिनिधिमंडल का सचिव बनाया गया था। 1930 में उन्हें मद्रास में पार्थ सारथी मंदिर के ऊपर भारतीय ध्वज फहराने के आरोप में गिरफ्तार किया गया था।

गांव बिरोहड़ के सरकारी कालेज में स्वतंत्रता सेनानी एस सत्यमूर्ति के जन्मदिवस पर पौधारोपण करते प्रोफेसर। ● विज्ञप्ति

कार्यक्रम की अध्यक्षा डा. अनिता फौगाट ने कहा कि 1940 में व्यक्तिगत सत्याग्रह में भाग लेने के बाद उन्हें आठ महीने की अवधि के लिए फिर से गिरफ्तार कर लिया गया और जेल में डाल दिया गया। 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन के समय बंबई में कांग्रेस कमेटी की बैठक से मद्रास वापस जाते समय, वापस पहुंचने से पहले उन्हें फिर से गिरफ्तार कर लिया गया। इसके बाद गिरफ्तार होने पर नागपुर की अमरावती जेल में एक रीढ़ की हड्डी की चोट के कारण मद्रास जनरल अस्पताल में एस सत्यमूर्ति की मृत्यु 28 मार्च 1943 हुई। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में प्रो. नरेंद्र सिंह, ओमबीर, अमरदीप इत्यादि का सहयोग रहा।

147. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 114th Birth Anniversary of great freedom fighter and Revolutionary Shivaram Rajguru on 24.08.2022 and delivered keynote address on “Rajguru: An Unforgettable Hero of Indian Freedom Struggle”.

अमर उजाला, झज्जर 25.08.2022

क्रांतिकारी राजगुरु को जयंती पर किया याद

साल्हावास । राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोतर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महान क्रांतिकारी शिवराम राजगुरु की 114 वीं जयंती के अवसर पर उन्हें याद किया। कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डॉ अमरदीप ने कहा कि शिवराम राजगुरु ने 22 साल की आयु में ब्रिटिश हुकूमत को हिला दिया था। राजगुरु के जीवन का क्रांतिकारी मोड़ लाला लाजपत राय की मृत्यु के बाद आया जो साइमन कमीशन का विरोध के करने पर लाठीचार्ज का शिकार हुए थे। जिसके कारण उनकी मृत्यु हो गई थी। बदला लेने के लिए चंद्रशेखर आजाद भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव एवं अन्य क्रांतिकारियों ने लाठीचार्ज करवाने वाले पुलिस अधीक्षक जेम्स ए स्कॉट को 17 दिसंबर, 1928 को मारने की योजना बनाई परंतु स्कॉट की बजाय सहायक आयुक्त, जॉन पी सॉनव्डर्स जो लाठीचार्ज में शामिल थे, उनकी हत्या कर दी गई। संवाद

148. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 134th Birth Anniversary of great freedom fighter and Revolutionary Kanailal Dutta on 31.08.2022 and delivered keynote address on “Revolutionary Movement in Bengal: Contribution of Kanailal Dutta.”

अमर उजाला, झज्जर 01.09.2022

कार्यक्रम — बीस वर्ष की आयु में देश की आजादी के लिए हुए थे शहीद

जयंती पर याद किए गए कनाई लाल दत्त

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास। आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महाविद्यालय प्राचार्या डॉ अनीता फोगाट की अध्यक्षता में महान क्रांतिकारी कनाई लाल दत्त की 134 वीं जयंती के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डॉ अमरदीप ने कहा कि कनाई लाल ने बंगाल विभाजन का विरोध किया और चंदननगर से आंदोलन का मोर्चा निकाला। 30 अगस्त 1888 को बंगाल में हुगली जिले के चंदन नगर में जन्मे कनाई लाल पर प्रोफेसर चारूचंद्र रॉय का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा।

1908 में कलकत्ता में क्रांतिकारी संगठन 'जुगांतर' से जुड़ने के बाद वह बरीन्द्र कुमार घोष के घर में रहे। इसी बीच 30 अप्रैल 1908 को खुदीराम और उनके साथी प्रफ्फुलचंद्र चाकी ने मुजफ्फरपुर में किंग्सफ़ोर्ड पर बम फेंका। इस घटना ने ब्रिटिश सरकार की नींदें उड़ा दी। क्रांतिकारियों की धर-पकड़ शुरू हो गई। मई 1908 में पुलिस ने कनाई लाल के ठिकाने पर भी छापा मारा।

घर में एक बम फैक्ट्री मिली। यहां से काफी मात्रा में पुलिस को क्रांतिकारियों के हथियार मिले। इसके बाद अंग्रेजों ने अरविन्द घोष, बरिन्द्र घोष, सत्येन्द्र नाथ व कनाई लाल समेत 35 आजादी के सिपाहियों को गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार होने वाले लोगों में, नरेंद्र नाथ गोस्वामी नाम का सहयोगी भी था। नरेंद्र गोस्वामी ने ब्रिटिश सरकार के डर से और जेल से छूटने के लालच में अपने साथियों के नाम बताना शुरू कर दिया।

कनाई लाल ने अपने सहयोगी सत्येन बोस के साथ उसकी हत्या की योजना बनाई। योजना के तहत बीमार होने का नाटक करके जेल के अस्पताल में पहुंच गये और जैसे ही वहा नरेंद्र गोस्वामी अस्पताल में सत्येन और कनाई लाल के सामने आए। उन्होंने अपने कपड़ों में छिपाई रिवाल्वर निकालकर, उन पर गोलियां बरसा दीं और मौके पर ही नरेंद्र की मृत्यु हो गई।

इस घटना ने पूरे देश में तहलका मचा दिया कि कैसे दो क्रांतिकारियों ने ब्रिटिश पुलिस की आंखों के सामने उनके गवाह की हत्या कर दी। 21 अक्टूबर 1908 को कनाई लाल और सत्येन को फांसी की सजा सुनाई गई। डॉ अनीता फोगाट ने कहा कि 10 नवंबर 1908 को कनाई लाल दत्त को मात्र 20 बरस की आयु में फांसी हुई। खुदीराम बोस के बाद फांसी के फंदे पर झूलने वाले वह दूसरे क्रांतिकारी थे। फांसी के बाद, जब उनके शव को उनके परिजनों को दिया गया तो आजादी के इस परवाने को देखने के लिए हजारों की संख्या में भीड़ उमड़ी। कोलकाता का कालीघाट लोगों से भर गया था और इस घटना ने क्रांतिकारी आंदोलन को बहुत बढ़ावा दिया।

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 01.09.2022

अमृत महोत्सव के तहत गांव बिरोहड़ कालेज में छात्र शिक्षकों ने क्रांतिकारी कनाई लाल दत्त को किया याद

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महाविद्यालय प्राचार्या डा. अनीता फौगाट की अध्यक्षता में महान क्रांतिकारी कनाई लाल दत्त की 134वीं जयंती मनाई गई। कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डा. अमरदीप ने कहा कि कनाई लाल ने बंगाल विभाजन का विरोध किया और चंदननगर से आंदोलन का मोर्चा निकाला।

30 अगस्त, 1888 को बंगाल में हुगली जिले के चंदन नगर में जन्मे कनाई लाल पर प्रोफेसर चारूचंद्र राय का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा। 1908 में कलकत्ता में क्रांतिकारी संगठन से जुड़ने के बाद वह बरींद्र कुमार घोष के घर में रहे। इसी बीच 30 अप्रैल 1908 को खुदीराम और उनके साथी प्रफुलचंद्र चाकी ने मुज़फ्फरपुर में किंग्सफोर्ड पर बम फेंका। मई 1908 में पुलिस ने कनाई लाल के ठिकाने पर भी छापा मारा और उन्हें घर में एक बम फैक्ट्री मिली।

यहां से काफी मात्रा में पुलिस को क्रांतिकारियों के हथियार मिले। इसके बाद अंग्रेजों ने अरविन्द घोष, बरिन्द्र घोष, सत्येन्द्र नाथ व कनाई लाल समेत 35 आजादी के सिपाहियों को गिरफ्तार कर लिया। 21 अक्टूबर 1908 को कनाई लाल और सत्येन को फांसी की सजा सुनाई गई। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए डा. अनीता फौगाट ने कहा कि 10 नवंबर 1908 को कनाई लाल दत्त को मात्र 20 वर्ष की आयु में फांसी हुई। खुदीराम बोस के बाद फांसी के फंदे पर झूलने वाले वह दूसरे क्रांतिकारी थे।

चरखी दादरी : गांव बिरोहड़ के सरकारी कालेज में विद्यार्थियों को क्रांतिकारी कनाई लाल दत्त के बारे में बताते डा. अमरदीप। ● विज्ञप्ति

149. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special tree plantation drive on 197th Birth Anniversary of great freedom fighter Dadabhai Naoroji on 03.09.2022 and delivered keynote address on "Grand Old Man of India: Dadabhai Naoroji."

दैनिक भास्कर झज्जर भास्कर 04-09-2022

आजादी अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत बिरोहड़ में हुआ कार्यक्रम

स्वतंत्रता सेनानी दादा भाई नौरोजी के 197 वें जन्मदिवस पर पौधरोपण किया

भास्कर न्यूज | झज्जर

आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महान स्वतंत्रता सेनानी दादा भाई नौरोजी के 197 वें जन्मदिवस पर पौधरोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर डॉ. अमरदीप, डॉ. नरेंद्र सिंह, जितेन्द्र, दीपक व विद्यार्थियों द्वारा बरगद के पेड़ लगाए गए। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. अमरदीप ने कहा कि दादा भाई नौराजी भारत में आर्थिक राष्ट्रवाद के जनक थे। भारतीय राजनीति का पितामह के रूप में पहचाने जाने वाले दादा भाई नौरोजी का जन्म 4 सितंबर 1825 को मुंबई में जन्मे थे। वह दिग्गज राजनेता, उद्योगपति, शिक्षाविद और विचारक भी थे। 1845 में एल्फिन्स्टन कॉलेज में गणित के प्राध्यापक हुए। भारत में राष्ट्रवाद का उदय और विकास के लिए कई संगठनों का निर्माण दादाभाई नौराजी ने भारत और लन्दन में किया। 1867 में उन्होंने 'ईस्ट इंडिया एसोसिएशन' बनाई। 1885 में 'मुंबई विधान परिषद' के सदस्य बने और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 'पावर्टी एण्ड अन ब्रिटिश रूल इन इण्डिया' उनकी सबसे महत्वपूर्ण पुस्तक थी जिसमें उन्होंने ब्रिटिश सरकार का भारत पर शासन करने के नैतिक औचित्य के दावे को न सिर्फ ख़ारिज किया बल्कि उनके कुशासन पर भी कुठाराघात किया। कार्यक्रम की अध्यक्षा डॉ. अनीता फोगाट ने कहा कि दादाभाई नौरोजी ने स्वराज शब्द का प्रयोग करके भारत में आजादी की मांग को मुखर किया। आज़ादी के आन्दोलन में दादा भाई नौराजी ने उल्लेखनीय भूमिका निभाई। इस विशेष वृक्षारोपण कार्यक्रम को सफल बनाने में प्रोफेसर नरेंद्र सिंह, जितेन्द्र और अमरदीप ने भूमिका निभाई।

स्वतंत्रता सेनानी दादा भाई नौरोजी के जन्मदिवस पर पौधरोपण करते हुए।

अधिकारी अजीत सिंह, खंड विकास... पत्र और आधार कार्ड होना जरूरी है।

दैनिक जागरण, चरखी दादरी
04.09.2022

स्वतंत्रता सेनानी दादा भाई नौरोजी के जन्मदिवस पर किया पौधारोपण

गांव बिरोहड़ के सरकारी कालेज में स्वतंत्रता सेनानी दादा भाई नौरोजी के जन्मदिवस पर पौधारोपण करते प्रवक्ता। ● विज्ञप्ति

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में प्राचार्या डा. अनीता फोगाट की अध्यक्षता में स्वतंत्रता सेनानी दादा भाई नौरोजी के 197 वें जन्मदिवस पर विशेष वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर डा. अमरदीप, डा. नरेंद्र सिंह, जितेन्द्र, दीपक व विद्यार्थियों द्वारा बरगद के पेड़ लगाए गए। कार्यक्रम के संयोजक डा. अमरदीप ने कहा कि दादा भाई नौरोजी भारत में आर्थिक राष्ट्रवाद के जनक थे। कार्यक्रम की अध्यक्षा करते हुए डा. अनीता फोगाट ने कहा कि दादाभाई नौरोजी ने स्वराज शब्द का प्रयोग करके भारत में आजादी की मांग को मुखर किया। भारत के आज़ादी के आंदोलन में दादा भाई नौराजी ने उल्लेखनीय भूमिका निभाई। कार्यक्रम को सफल बनाने में प्रोफेसर नरेंद्र सिंह, जितेन्द्र और अमरदीप ने भूमिका निभाई।

150. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 106th Martyrdom of great freedom fighter and Revolutionary Jatindranath Mukherji on 12.09.2022 and delivered keynote address on "Role of Jatindranath Banerji in Indian Freedom Struggle."

के छात्रों
अंडर-17
मातनहेल
मुकाबले
टेकने पर

अमर उजाला, झज्जर 13.09.2022

देते हुए
क्षकों को
कर्मबीर
राजकीय

श्रद्धांजलि

जतींद्र नाथ मुखर्जी की पुण्यतिथि पर बिरोहड़ कॉलेज में हुआ कार्यक्रम

जंगे-ए-आजादी की धधकती ज्वाला छोड़ गए जतींद्र

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास। आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में कार्यक्रम हुआ। प्राचार्या डॉ. अनीता फोगाट की अध्यक्षता में स्वतंत्रता संग्राम के महान क्रांतिकारी जतींद्र नाथ मुखर्जी की 107 वीं शहीदी दिवस पर उनके योगदान पर चर्चा की गई।

कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि ये जतींद्र नाथ मुखर्जी बाघा जतिन के नाम से विख्यात थे। उन्होंने एक छोटे से चाकू से खूंखार बाघ को ढेर कर दिया था।7 दिसंबर 1879 को तत्कालीन बंगाल प्रेसीडेंसी में जन्मे जतिन नाथ युवावस्था से ही आजाद भारत का स्वप्न लिए क्रांतिपथ पा लेने के

जतींद्र नाथ मुखर्जी की पुण्यतिथि पर व्याख्यान देते विशेषज्ञ। संवाद

लिए चल पड़े थे। स्वामी विवेकानंद और अरविंद घोष ने उनके जीवन को सर्वाधिक प्रभावित किया और उन्होंने अपना जीवन को देश के लिए बलिदान करने का प्रण कर लिया था। क्रांतिकारी अखबार युगांतर में उन्होंने अपने एक लेख में लिखा था- पूंजीवाद समाप्त कर श्रेणीहीन समाज की स्थापना क्रांतिकारियों का लक्ष्य है। देसी-विदेशी शोषण से मुक्त कराना और आत्मनिर्णय द्वारा जीवन-यापन का अवसर देना हमारी मांग है। तत्कालीन समय में क्रांतिकारियों के पास आंदोलन के लिए धन जुटाने का प्रमुख साधन डकैती था। जतींद्र नाथ ने उस समय की दो बड़ी डकैतियां डाली जिन्हें इतिहास में गार्डन रीच की डकैती और बलिया घाट के नाम से जाना जाता है। बलिया घाट की डकैती से जतींद्र नाथ का 52 माउजर पिस्तौलें और 50 हजार गोलियां प्राप्त हुई थीं।

महाविद्यालय के प्राचार्या एवं कार्यक्रम के अध्यक्ष अनीता फोगाट ने कहा कि सितंबर 1915 में पुलिस ने जतींद्रनाथ का गुप्त अड्डा काली पोक्ष ढूंढ निकाला। 9 सितम्बर 1915 को अंग्रेजी अधिकारियों और सिपाहियों ने जतींद्रनाथ को घेर लिया और भयंकर मुठभेड़ में घायल होने के बाद 10 सितम्बर, 1915 को भारत की आजादी के इस महान सिपाही ने अस्पताल में सदा के लिए आंखें मूंद लीं। परंतु अपने पीछे आजादी की लड़ाई की धधकती हुई ज्वाला छोड़ गया।

151. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 80th Birth Anniversary of great freedom fighter and Revolutionary Kanaklata Barau on 19.09.2022 and delivered keynote address on “Kanaklata Barua: Woman Revolutionary and Indian Freedom Struggle.”

अमर उजाला, झज्जर 20.09.2022

श्रद्धांजलि

कनकलता बरुआ की पुण्यतिथि पर हुआ विस्तार व्याख्यान का आयोजन

गोलियों से छलनी होने पर भी झुकने नहीं दिया तिरंगा

संवाद न्यूज एजेंसी

सात्हावास। आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में प्राचार्य डॉ. अनीता फोगाट की अध्यक्षता में विस्तार व्याख्यान आयोजित किया गया। जिसमें महान स्वतंत्रता सेनानी कनकलता बरुआ के 80वीं शहीदी दिवस पर आजादी में उनके योगदान पर चर्चा की गई।

कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि 1942 में गोलियों से छलनी होने पर भी कनकलता बरुआ ने तिरंगा नीचे नहीं गिरने नहीं दिया। असम के कृष्णकांत बरुआ के घर में 22 दिसंबर 1924 को जन्मी कनकलता ने बचपन में ही अपनी मां को खो दिया था। परंतु उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। असम के प्रसिद्ध कवि ज्योति प्रसाद आग्रवाल की कविताओं और गीतों ने कनकलता में राष्ट्रभक्ति के बीज अंकुरित किए। मुंबई में जब 8 अगस्त 1942 को अंग्रेजों भारत छोड़ो प्रस्ताव पारित हुआ, तब यह देश के कोने-कोने में फैल गया। असम सहित देशभर के शीर्ष नेताओं को जेल में डाल दिया गया। ज्योति प्रसाद अग्रवाल ने नेतृत्व संभालते हुए एक गुप्त सभा की।

जिसमें अंग्रेजी हुकूमत की प्रतीक इमारतों पर तिरंगा फहराने का निर्णय लिया गया गया। कनकलता ने गोहपुर पुलिस थाने पर तिरंगा फहराने का प्रण लिया और 20 सितम्बर 1942 को 18 वर्ष की कनकलता हाथ में तिरंगा थाम कर पुलिस थाने की ओर बढ़ने लगी, जिसे देखकर युवाओं में देशभक्ति का तूफान उठ खड़ा हुआ और भारी भीड़ पुलिस थाने की ओर बढ़ने लगी। थाना प्रभारी द्वारा गोलियां चलाने पर सबसे पहली गोली कनकलता को लगी परंतु न उसके बढ़ते कदम रुके और न ही तिरंगा नीचे गिरा। इसके बाद गोलियां लगने से कनकलता मात्र 18 वर्ष की आयु में देश की आजादी की आवाज को बुलंद करते हुए शहीद हो गयी परंतु अंत में राजपति राजखोवा ने पुलिस थाने पर तिरंगा लहराकर आंदोलन को पूर्ण किया। महाविद्यालय की प्राचार्य एवं कार्यक्रम की अध्यक्षा अनीता फोगाट ने कहा कि कनकलता ने छोटी सी उम्र में अपनी जान देश की आजादी के लिए न्योछावर करके युवाओं के सामने एक मिसाल रखी जो वर्तमान समय में भी हमें प्रेरणा देती है। उसके संघर्ष और बलिदान से ही भारत छोड़ो आंदोलन को एक नई ऊंचाई मिली। इस कार्यक्रम में प्रोफेसर जितेंद्र, पवन कुमार और डॉ. अजय कुमार इत्यादि उपस्थित रहे।

बिरोहड़ कॉलेज में कनकलता बरुआ की पुण्यतिथि पर हुआ व्याख्यान। संवाद

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 20.09.2022

बिरोहड़ के सरकारी कालेज में स्वतंत्रता सेनानी कनकलता बरुआ को किया याद

स्वतंत्रता सेनानी कनकलता बरुआ के बारे में बताते डा. अमरदीप। ● विज्ञप्ति।

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत गांव बिरोहड़ स्थित राजकीय महाविद्यालय के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में प्राचार्या डा. अनिता फौगाट की अध्यक्षता में स्वतंत्रता सेनानी कनकलता बरुआ की 80 वें बलिदान दिवस पर एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के संयोजक डा. अमरदीप ने कहा कि 1942 में गोलियों से छलनी होने पर भी कनकलता बरुआ ने तिरंगा नीचे नहीं गिरने दिया। असम के प्रसिद्ध कवि ज्योति प्रसाद अग्रवाल की कविताओं और गीतों ने कनकलता में राष्ट्रभक्ति के बीज अंकुरित किए। मुबंई में जब 8 अगस्त 1942 को अंग्रेजों भारत छोड़ो प्रस्ताव पारित हुआ, तब यह देश के कोने-कोने में फैल गया।

कनकलता ने गोहपुर पुलिस थाने पर तिरंगा फहराने का प्रण लिया और 20 सितंबर 1942 को 18 वर्ष की कनकलता हाथ में तिरंगा थाम कर पुलिस थाने की और बढ़ने लगी। इसके बाद गोलियां लगने से कनकलता मात्र 18 वर्ष की आयु में बलिदान हो गई। कार्यक्रम में प्रोफेसर जितेंद्र, पवन कुमार, डा. अजय कुमार इत्यादि उपस्थित रहे।

दैनिक भास्कर झज्जर भास्कर 21-09-2022

स्वतन्त्रता सेनानी कनकलता बरुआ का शहीद दिवस मनाया

भास्कर न्यूज | साल्हावास

गांव बरोह स्थित राजकीय महाविद्यालय में आजादी अमृत महोत्सव श्रृंखला में स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में स्वतंत्रता सेनानी कनकलता बरुआ की 80वीं शहीदी दिवस पर कार्यक्रम हुआ। प्राचार्या अनीता फोगाट ने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कहा कि कनकलता ने छोटी सी उम्र में अपनी जान देश की आजादी के लिए न्योछावर करके युवाओं के सामने एक मिसाल रखी जो वर्तमान समय में भी हमें प्रेरणा देती है। उन्होंने कहा कि 1942 में गोलियों से छलनी होने पर भी कनकलता बरुआ ने तिरंगा नीचे नहीं गिरने नहीं दिया।

152. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 90th Death Anniversary of great freedom fighter and Revolutionary Moulvi Mohamed Barakatullah on 20.09.2022 and delivered keynote address on "Role of Jatindranath Banerji in Indian Freedom Struggle."

अमर उजाला, झज्जर 21.09.2022

सेमिनार

बरकतउल्ला खान की पुण्यतिथि पर बिरोहड़ कॉलेज में हुआ सेमिनार

भारत की पहली निर्वासित सरकार के थे प्रधानमंत्री

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास। आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्राचार्य डॉ. अनीता फोगाट की अध्यक्षता में हुए कार्यक्रम में महान स्वतंत्रता सेनानी मौलवी बरकत उल्ला खान के 95वीं शहीदी दिवस पर उनके योगदान पर चर्चा की गई।

कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि बरकत उल्ला खान 1915 में भारत की पहली निर्वासित अस्थायी सरकार के प्रधानमंत्री थे। उन्होंने भारत की स्वतंत्रता के लिए प्रमुख समाचार पत्रों में उग्र भाषणों और क्रांतिकारी लेखन के साथ भारत के बाहर से लड़ाई लड़ी। बरकातुल्ला का जन्म 7 जुलाई 1854 को मध्य प्रदेश के भोपाल में हुआ था। उन्होंने अमेरिका, इंग्लैंड, जर्मनी, अफगानिस्तान, जापान और मलाया में रहने वाले भारतीयों में ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध बगावत की चिंगारी भरी। विश्व के बड़े नेताओं से हिंदुस्तान में आजादी की लड़ाई के लिए मदद मांगी, उनमें से प्रमुख थे कैसर विल्हेम, अमीर हबीबुल्लाह खान, मोहम्मद रिशेद, गाजी पाशा, लेनिन और हिटलर इत्यादि। इंग्लैंड में रहते हुए राजा महेंद्र प्रताप और लाला हरदयाल के संपर्क में आए। वह 1913 में सैन फ्रांसिस्को, अमेरिका में गदर पार्टी के संस्थापकों में से एक थे। आजादी के आंदोलन में एक बड़ा पड़ाव तब आया जब भारत की पहली अस्थायी सरकार, 1 दिसंबर 1915, को अफगानिस्तान में बनी और बरकत उल्ला इसके प्रधानमंत्री बने।

मौलवी बरकतउल्ला खान पर व्याख्यान में भाग लेते विद्यार्थी। संवाद

निर्वासित भारतीयों में जगाई देशभक्ति की भावना

महाविद्यालय की प्राचार्य एवं कार्यक्रम की अध्यक्ष अनीता फोगाट ने कहा कि काबुल में स्थापित इस सरकार का मकसद उत्तर से हमला कर भारत से अंग्रेजों को भगाना था। मगर प्रथम विश्व युद्ध छिड़ गया और इसलिए प्लान कामयाब न हुआ। मगर गदर पार्टी की जलाई चिंगारी ने ही इतने क्रांतिकारी पूरी दुनिया में पैदा किए कि आगे राष्ट्रीय आंदोलन में मलाया से ले कर कनाडा तक हर जगह निर्वासित भारतीय में देशभक्ति की भावना जाग गयी। परंतु बरकत उल्ला भारत की आजादी देख नहीं पाए और 1927 में सैन फ्रांसिस्को में उनकी मृत्यु हो गई और उन्हें सैक्रामेंटो सिटी सिमेट्री कैलिफोर्निया, अमेरिका में दफनाया गया। इस कार्यक्रम में प्रोफेसर पवन कुमार इत्यादि उपस्थित रहे।

153. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 143rd Birth Anniversary of great freedom fighter and social reformer E.V. Ramaswami Periyar on 21.09.2022 and delivered keynote address on "Socio-Political Contribution of E.V. Ramaswami Periyar in Making of Modern India."

ई.वी. रामास्वामी एक महान समाज सुधारक थे: डॉ अमरदीप

झज्जर, 21 सितंबर (अभीतक) : बुधवार को आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महान स्वतंत्रता सेनानी और महान समाज सुधारक ई. वी. रामास्वामी पेरियार के 143 वें जन्मदिवस पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के संयोजक एवम इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ अमरदीप ने कहा कि ई.वी. रामास्वामी एक महान समाज सुधारक थे जिन्होंने मानव के अधिकारों और पाखंडों-आडम्बरों के विरुद्ध आजीवन संघर्ष किया। पेरियार ई.वी. रामास्वामी ने जीवन में तर्कवाद को सर्वोच्च स्थान देते हुए अन्धविश्वास पर जोरदार प्रहार किया। 20 वीं शताब्दी में उन्होंने मानवतावादी दृष्टिकोण अपनाते हुए आत्म सम्मान आन्दोलन की नींव रखी एवं जातिप्रथा की घोर निंदा करते हुए 'आत्म सम्मान आन्दोलनÓ या 'द्रविड़ आन्दोलनÓ प्रारंभ किया था। उन्होंने जस्टिस पार्टी का गठन किया जो बाद में जाकर 'द्रविड़ कड़गमÓ हो गई। इतिहास प्राध्यापक जितेन्द्र ने कहा पेरियार के कार्यों एवं आन्दोलन को सम्मान देते हुए यूनेस्को ने भी अपने उद्धरण में उन्हें 'नए युग का पैगम्बर, दक्षिण पूर्व एशिया का सुकरात, समाज सुधार आन्दोलन के पिता, अज्ञानता, अंधविश्वास और बेकार के रीति-रिवाज़ का दुश्मनÓ कहा। महाविद्यालय के प्राचार्या डा. अनीता फोगाट ने कहा कि महिलाओं के अधिकारों एवं मुक्ति के लिए पेरियार ने आजीवन संघर्ष किया। 'वाइकोम-आंदोलन का नेतृत्व भी रामास्वामी नायकर ने ही किया तथा उनके गिरफ्तार होने के पश्चात् उनकी पत्नी नागम्मई एवं एस. रामनाथन ने नेतृत्व की बागडोर संभाली। इस आंदोलन के परिणामस्वरूप अछूतों के अधिकारों को स्वीकार किया गया और उनके स्वतंत्र आवागमन पर लगे सारे प्रतिबंध हटा लिए गये। इस कार्यक्रम में प्रोफेसर जितेन्द्र, पवन कुमार इत्यादि उपस्थित रहे।

154. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 159th Martyrdom of Great freedom fighter and Revolutionary Rao Tularam on 23.09.2022 and delivered keynote address on "Freedom Struggle of 1857 and Rao Tularam."

दैनिक जागरण, झज्जर 24.09.2022

राव तुलाराम का देश की आजादी में अहम योगदान : डा अनिता

राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वाधान में आयोजित कार्यक्रममें अपनी बात रखते हुए। ● संस्था

संवाद सूत्र, साल्हावास : राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वाधान में प्राचार्या डा. अनिता फोगाट की अध्यक्षता में स्वतंत्रता संग्राम के महान योद्धा राव तुला राम के 159 वें शहीदी दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। महाविद्यालय प्राचार्या ने कहा कि भारत से बाहर जाकर राव तुला राम ने ईरान के शाह, अफगानिस्तान के तत्कालीन शासक दोस्त मोहम्मद खान और रूस के राजा एलेक्सेंडर द्वितीय से मदद मांगी। ताकि अंग्रेजी शासन से भारतवर्ष को मुक्त कराया जा सके। इसी बीच 23 सितंबर 1863 में राव तुला राम की काबुल में 38 वर्ष की आयु में मृत्यु हो गई। शहीदी दिवस पर विचार रखते हुए इतिहास विभागाध्यक्ष डा. अमरदीप ने कहा कि राव तुला राम ने 1857 की क्रांति में ब्रिटिश हुकूमत को हिलाकर रख दिया था। 1857 का महान संग्राम अम्बाला से प्रारम्भ हुआ और दिल्ली पर क्रांतिकारियों का अधिकार होने के बाद राव तुला राम ने भारत के मुगल बादशाह बादशाह बहादुर शाह जफर से मुलाकात की और दिल्ली की सेना को न केवल धन और सैन्य शक्ति से मदद की थी।

155. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special tree plantation drive on 163rd death Anniversary of great freedom fighter and Revolutionary Nana Saheb on 12.09.2022.

अमर उजाला, झज्जर 25.09.2022

1857 के विद्रोह के नायक नाना साहेब को किया याद

पौधारोपण करता कॉलेज का स्टॉफ। संवाद

साल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महान क्रांतिकारी नाना साहेब पेशवा की 163 वीं पुण्यतिथि के अवसर पर एक पौधारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

इस अवसर पर डॉ अमरदीप, डॉ प्रदीप कुंडू, डॉ नरेंद्र सिंह, जितेंद्र और दीपक द्वारा पौधरोपण किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष ने इस अवसर पर नाना साहेब का 1857 की महान क्रांति में योगदान का स्मरण करवाते हुए कहा कि 1857 के विद्रोह में नाना साहेब ने नयी जान फूंकी थी व आजीवन ब्रिटिश सरकार उन्हें पकड़ नही पाई।

इतिहास प्राध्यापक जितेंद्र ने कहा कि नाना साहब के प्रमुख सिपहसलार तात्या टोपे की गोरिल्ला युद्ध नीति ने अंग्रेजी सेना की नाक में दम किया था। डॉ अमरदीप ने कहा कि जब अंग्रेजों ने कानपूर, दिल्ली इत्यादि पर दोबारा अधिकार कर लिया तो नाना साहेब अंग्रेजों की गिरफ्त से बचकर विदेश में ब्रिटिश सरकार के खिलाफ सहायता के लिए नेपाल चले गए जहां 24 सितंबर 1859 को इनका निधन हो गया परंतु अपने पीछे आजादी की ललक और ज्वाला छोड़ गए। संवाद

156. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 115th Birth Anniversary of great freedom fighter and Revolutionary Bhagat Singh on 29.09.2022 and delivered keynote address on "the ideology of Bhagat Singh and Idea of New India."

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 30.09.2022

युवाओं को आजादी, क्रांति के पथ पर चलने को प्रेरित किया भगत सिंह ने : अमरदीप

गांव चिड़िया के सरकारी कालेज में बलिदानी भगत सिंह की कुर्बानी के बारे में बताते डा. अमरदीप। • जागरण

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : गांव चिड़िया के राजकीय महाविद्यालय में आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में प्राचार्य डा. रणबीर आर्य की अध्यक्षता में बलिदानी भगत सिंह के जन्मदिवस पर कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक डा. अमरदीप ने कहा कि भगत सिंह एक महान देशभक्त थे। जिन्होंने ब्रिटिश हुकूमत को हिलाकर रख दिया था। 1931 में भगत सिंह की प्रसिद्धि महात्मा गांधी से भी ज्यादा हो गई थी। भगत सिंह ने आजादी के संग्राम को नई दिशा दी और एक नई जान फूंकी। ब्रिटिश हुकूमत का अंत नजदीक लाने में भगत सिंह और उनके क्रांतिकारी साथियों की गतिविधियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। 1919 के जलियांवाला बाग नरसंहार ने भगत सिंह को बहुत प्रभावित किया और उन्हें क्रांतिकारी पथ पर चलने के लिए प्रेरित किया। 1926 में भारत नौजवान सभा की स्थापना करके भगत सिंह ने सबसे पहले पंजाब और फिर बाद में सारे भारत के नौजवानों को क्रांतिपथ पर चलने के लिए प्रभावित किया। महाविद्यालय की प्रशासनिक इंचार्ज डा. अनीता रानी ने कहा कि अप्रैल 1929 में केन्द्रीय असेम्बली बम विस्फोट ने भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त को एक तरह से सारी भारतीय जनता का प्रतिनिधि बना दिया था। क्योंकि उस दिन मजदूर और व्यापार विरोधी बिल पास होने थे। भले ही भगत सिंह को 1931 में फांसी की सजा दे दी गई परंतु उनके संघर्ष को हम कभी भूल नहीं पाएंगे।

भगत सिंह का इंकलाब विषय पर हुई विचार गोष्ठी

झोझू कलां के आर्य स्कूल में भगत सिंह को नमन करते शिक्षक व छात्र। • जागरण

संवाद सूत्र, झोझू कलां : कस्बा झोझू कलां के आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में भगत सिंह जयंती पर भगत सिंह का इंकलाब विषय पर विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। प्राचार्य डा. प्रमेंद्र चितौड़िया, संस्था के चेयरमैन अशोक शर्मा के नेतृत्व में सभी शिक्षकों एवं छात्र छात्राओं ने बलिदानी भगत सिंह को पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें याद किया। डा. चितौड़िया ने कहा कि हमें भगत सिंह के प्रेरणादायी जीवन से प्रेरणा लेकर समाज हित व राष्ट्र हित के लिए कार्य करना चाहिए।

संस्था के चेयरमैन अशोक शर्मा ने कहा कि भगत सिंह का इंकलाब केवल राजनीतिक आजादी के लिए नहीं था अपितु सामाजिक, आर्थिक राजनीतिक समस्त प्रकार की आजादी के लिए उन्होंने इंकलाब का नारा दिया। विचार गोष्ठी का संचालन किशन सिंह आर्य ने किया। गतिविधि प्रभारी संदीप चितौड़िया ने भी अपने देश भक्ति गीत के माध्यम से भगत सिंह को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। इस दौरान प्राध्यापक सूरजभान शर्मा, जितेंद्र शर्मा, राकेश जांगड़ा, चरण सिंह, भीम सिंह, प्रदीप कुमार, मजीद खान, राकेश कुमार, अंजू देवी, मनीषा, रीना, अंजू, संगवान, नीलम कुंडू आदि प्रमुख रूप से मौजूद रहे।

****

157. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 80th Martyrdom of great freedom fighter and Revolutionary Veerangna Matangini Hazra on 30.09.2022 and delivered keynote address on "Matangini Hazra: Unforgotten Bravery in Quit India Movement."

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 01.10.2022

72 साल की मातंगिनी हाजरा ने सीने पर खाई गोली फिर भी नहीं झुकने दिया तिरंगा : डा. अमरदीप

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत शुक्रवार को गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में प्राचार्य डा. रणबीर आर्य की अध्यक्षता में क्रांतिकारी वीरांगना मातंगिनी हाजरा के 80वें बलिदान दिवस पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डा. अमरदीप ने कहा कि 1942 का साल आजादी के संग्राम में एक महान पड़ाव था।

विरोहड़ के सरकारी कालेज में मातंगिनी हाजरा के बारे में बताते डा. अमरदीप। ● विज्ञप्ति।

इस समय अंग्रेजी हुकूमत को टक्कर देते हुए भारत छोड़ो आंदोलन द्वारा एक गौरवमयी इतिहास लिखा जा रहा था। 29 सितंबर 1942 का ऐतिहासिक दिन आया जब 72 वर्ष की एक वृद्ध महिला मातंगिनी हाजरा जो बूढ़ी गांधी के नाम से विख्यात थी उसने अंग्रेजी गोलियों से छलनी होने पर तिरंगे को नीचे नहीं गिरने दिया और वंदे मातरम् कहते हुए अपना बलिदान दे दिया। ऐसी वीरांगना मातंगिनी हाजरा का जन्म 1870 में बंगाल के तामलुक में हुआ था और पहली बार उन्हें 60 साल की आयु में 1930 में सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान नमक कानून तोड़ने के आरोप में जेल की सजा हुई थी। महाविद्यालय की प्रशासनिक इंचार्ज और एसोसिएट प्रोफेसर डा. अनिता रानी ने कहा कि 1944 में महात्मा गांधी द्वारा समझाने पर सेनानियों ने सरकारी इमारतों का कब्जा छोड़ा। प्रोफेसर जितेंद्र व अजय सिंह भी उपस्थित रहे।

अमर उजाला, झज्जर 01.10.2022

आयोजन

राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में क्रांतिकारी मातंगिनी हाजरा को दी श्रद्धांजलि

सीने पर गोलियां खाकर भी तिरंगे को झुकने नहीं दिया

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महान क्रांतिकारी वीरांगना मातंगिनी हाजरा के 80 वें शहीदी दिवस के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया।

महाविद्यालय प्राचार्य डॉ रणबीर आर्य की अध्यक्षता में कार्यक्रम का आयोजन हुआ। संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ अमरदीप ने कहा कि 1942 का साल आजादी के संग्राम में एक महान पड़ाव था। इस समय अंग्रेजी हुकूमत को टक्कर देते हुए भारत छोड़ो आंदोलन के द्वारा एक गौरवमयी इतिहास लिखा जा रहा था। 29 सितंबर 1942 का ऐतिहासिक दिन आया जब 72 वर्ष की एक वृद्ध महिला, मातंगिनी हाजरा, जो बूढ़ी गांधी के नाम से विख्यात थी ने अंग्रेजी गोलियों से छलनी होने पर तिरंगे को नीचे नहीं गिरने दिया और वंदे मातरम कहती हुई शहीद हो गई। ऐसी वीरांगना मातंगिनी हाजरा का जन्म 1870 में बंगाल के तामलुक में हुआ था और पहली बार उन्हें 60 साल की आयु में 1930 में सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान नमक कानून तोड़ने के आरोप में जेल की सजा हुई थी। 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन को तामलुक में मातंगिनी हाजरा ने नई दिशा देते हुए सरकारी इमारतों पर कब्जा करने की मुहिम में शामिल हुई। 29 सितंबर 1942 को 6000 से अधिक की भीड़, जिसमें अधिकतर महिलाएं थी, ने तामलुक पुलीस स्टेशन पर तिरंगा लहराने के लिए निकली लेकिन तीन गोलियां लगी परंतु तिरंगे को झुकने नही दिया, इसके बाद भीड़ में अदम्य साहस का संचार हुआ और पुलिस स्टेशन पर कब्जा करके तिरंगा लहराया गया। इसके बाद 1944 तक दो साल तक तामलुक से ब्रिटिश हुकूमत समाप्त हो गई और तामलुक में स्वतंत्रता सेनानियों ने समानांतर सरकार स्थापित करके एक नया इतिहास रच दिया। इस कार्यक्रम में इतिहास विभाग के प्रोफेसर जितेंद्र एवं अजय सिंह इत्यादि उपस्थित रहे।

राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में व्याख्यान देते प्रोफेसर अमरदीप सिंह। संवाद

158. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 153rd Birth Anniversary of great freedom fighter Mahatma Gandhi on 01.10.2022 and delivered keynote address on "The Ideology of Non Violence and Satyagraha: Mahatma Gandhi and His Legacy."

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 02.10.2022

दैनिक जागरण हिसार, 2 अक्टूबर, 2022 | जागरण सिटी चरखी दादरी/बाढड़ | www.jagran.com

देश की आजादी के आंदोलन में महात्मा गांधी का योगदान अविस्मरणीय : डा. अमरदीप

कविता के माध्यम से बापू के जीवन पर डाला प्रकाश

गांधी जयंती के उपलक्ष्य पर बच्चों ने महात्मा गांधी के आदर्शों पर चलने का लिया संकल्प

दैनिक भास्कर झज्जर भास्कर 02-10-2022

आजादी का अमृत महोत्सव के तहत राजकीय कॉलेज बिरोहड़ में हुआ कार्यक्रम

विभिन्न जगह पर महात्मा गांधी का 153वां जन्मदिवस मनाया

भास्कर न्यूज | झज्जर

आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. रणबीर आर्य की अध्यक्षता में महान स्वतंत्रता सेनानी महात्मा गांधी के 153वें जन्मदिवस के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि आजादी के आन्दोलन में महात्मा गांधी की अद्वितीय भूमिका थी। 1915 में भारत लौटने पर महात्मा गांधी ने गोपाल कृष्ण गोखले के निर्देशानुसार सारे भारत का भ्रमण किया और भारतीय जनता की वास्तविक समस्याओं का जाना। 1920 में महात्मा गांधी ने असहयोग आन्दोलन और खिलाफत आन्दोलन के माध्यम से राजनीतिक जागरूकता फैलाई और एक वर्ष के अंदर स्वराज का नारा देकर युवाओं का आन्दोलन में भाग लेने के लिए प्रेरित भी किया। 1930 के सविनय अवज्ञा आन्दोलन के द्वारा अंग्रेजी सरकार को कड़ी टक्कर दी गई और हर प्रकार से ब्रिटिश हुकूमत को आदेशों को पालन करने से जनता को मना किया गया। आजादी के आन्दोलन में सबसे बड़ा परिवर्तन 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन से आया जब महात्मा गांधी ने अहिंसा का रास्ता छोड़कर 'करो या मरो' का नारा देकर आजादी लेने के लिए भारतीय जनमानस का आह्वान किया। ब्रिटिश हुकूमत के चुंगल से आजादी को आंशिक रूप से छीन लाए और 15 अगस्त 1947 को यह कामयाबी पूर्णत मिली भारत 190 साल की गुलामी से आजाद हो गया महात्मा गांधी ने उल्लेखनीय भूमिका निभाई।

स्वयंसेविकाओं ने गांधी की जयंती पर अंतरराष्ट्रीय अहिंसा दिवस मनाया

बहादुरगढ़ | गांधी जयंती की पूर्व संध्या पर वैश्य आर्य कन्या वैश्य आर्य कन्या महाविद्यालय की रेडक्रॉस स्वयंसेविकाओं ने पोस्टर व स्लोगन बना कर अहिंसा को अपने जीवन में अपनाने व रक्तदान महादान का संदेश दिया। महाविद्यालय के प्राचार्या डॉ राजवंती शर्मा ने स्वंयसेविकाओं को संबोधित करते हुए कहा कि 2 अक्टूबर को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी के जन्मदिवस को राष्ट्रीय पर्व के रूप में मना कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की जाती है। वे अहिंसा के पुजारी थे। उन्होंने भारत छोड़ो आंदोलन, असहयोग आंदोलन व सविनय अवज्ञा आंदोलन में हर तबके के लोगों को अपने साथ जोड़कर भारत को आजादी दिलाने में अपना अहम् योगदान दिया था। हमें उनके जीवन से प्रेरणा लेकर सत्य के मार्ग पर चलना चाहिए। साथ ही उन्होंने कहा कि 2 अक्टूबर को अंतरराष्ट्रीय अहिंसा दिवस के रूप में भी मनाया जाता है।

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 02.10.2022

देश की आज़ादी के आंदोलन में महात्मा गांधी का योगदान अविस्मरणीय: डॉ अमरदीप

देश की आजादी के आंदोलन में म

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में शनिवार को प्राचार्य डा. रणबीर आर्य की अध्यक्षता में स्वतंत्रता सेनानी महात्मा गांधी के 153वें जन्मदिवस के अवसर पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक डा. अमरदीप ने कहा कि आजादी के आंदोलन में महात्मा गांधी की अद्वितीय भूमिका थी।

साल 1915 में भारत लौटने पर महात्मा गांधी ने गोपाल कृष्ण गोखले के निर्देशानुसार सारे भारत का भ्रमण किया और भारतीय जनता की वास्तविक समस्याओं को जाना। 1920 में उन्होंने असहयोग आंदोलन और खिलाफत आंदोलन के माध्यम से राजनीतिक जागरूकता फैलाई और एक वर्ष के अंदर स्वराज का नारा देकर युवाओं को आंदोलन में भाग लेने के लिए प्रेरित भी किया। साल 1930 के सविनय अवज्ञा आंदोलन द्वारा अंग्रेजी सरकार को कड़ी टक्कर दी गई। सन 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन से आंदोलन में नया मोड़ आया जब महात्मा गांधी ने अहिंसा का रास्ता छोड़कर करो या मरो का नारा दिया। यही कारण था कि कांग्रेस के प्रथम स्तर के सभी बड़े नेताओं की गिरफ्तारी के बावजूद जनता ने स्वयं अपना नेतृत्व किया और ब्रिटिश हुकूमत के चंगुल से आजादी को आंशिक रूप से छीन लाए और 15 अगस्त 1947 को यह कामयाबी पूरी तरह मिल ही गई।

सरकारी स्कूल मे विद्यार्थियो को महात्मा गांधी के बारे मे बताते डा. अमरदीप। • विज्ञप्ति।

159. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special tree plantation derive on 118th Birth Anniversary of great freedom fighter Lal Bahadur Shastri on 03.10.2022 and delivered keynote address on "Life and Struggle of Lal Bahadur Shastri."

अमर उजाला, झज्जर 04.10.2022

'शास्त्री का जीवन था कर्मठता का प्रतीक'

पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री की जयंती पर राजकीय बिरोहड़ महाविद्यालय में हुआ पौधरोपण और व्याख्यान

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास। आजादी का अमृत महोत्सव के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. रणबीर सिंह आर्य की अध्यक्षता में कार्यक्रम हुआ।

महान स्वतंत्रता सेनानी लाल बहादुर शास्त्री की 118 वीं जयंती के अवसर पर पौधरोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर डॉ. अमरदीप, पवन कुमार, जितेंद्र और दीपक द्वारा त्रिवेणी लगाई गई।

कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने इस अवसर पर लाल बहादुर शास्त्री के भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में योगदान का स्मरण करवाया। उन्होंने कहा कि लाल बहादुर शास्त्री का जीवन राष्ट्रीय जीवटता और कर्मठता का प्रतीक है। राष्ट्र उनके लिए सर्वोपरि था और उनका जीवन राष्ट्र कल्याण में ही समर्पित था। जय जवान और जय किसान का नारा देकर उन्होंने एक सुरक्षित और आत्मनिर्भर भारत की नींव रखी थी। 2 अक्तूबर 1904 में उत्तर प्रदेश के मुगलसराय में जन्मे लाल बहादुर शास्त्री ने विषम परिस्थितियों में मिर्जापुर से प्राथमिक शिक्षा हासिल की। काशी विद्यापीठ से शास्त्री की परीक्षा पास करने पर उन्हें शास्त्री की उपाधि दी गई। 1920 में महात्मा गांधी द्वारा संचालित असहयोग आंदोलन में पढ़ाई छोड़कर आजादी के संघर्ष में कूद पड़े।

सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान उन्होंने कर रोको आंदोलन चलाया और जनता को टैक्स का भुगतान न करने के लिए आंदोलित किया। भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान 1942 में लाल बहादुर शास्त्री ने एक कदम आगे बढ़ाते हुए करो या मरो के नारे को परिवर्तित करते हुए मरो नहीं, मारो का नारा दिया। जिससे जनता में उत्साह भरा और उन्होंने आजाद भारत की संकल्पना को मूर्त रूप देने का जोरदार प्रयास किया। इसके पश्चात उन्हें 1 साल का कारावास भुगतना पड़ा।

बिरोहड़ कॉलेज में शास्त्री जयंती पर त्रिवेणी लगाते प्राध्यापक। संवाद

नैतिक जिम्मेदारी लेते हुए मंत्रि पद से दिया था इस्तीफा

आजादी के पश्चात लाल बहादुर शास्त्री पहले रेलमंत्री थे जिन्होंने रेल दुर्घटना होने पर नैतिक जिम्मेदारी लेते हुए मंत्री पद से त्यागपत्र दिया था। इतिहास प्रोफेसर जितेंद्र ने कहा कि जब भारत पाकिस्तान का युद्ध 1965 में हुआ था तो पाकिस्तान को हराने के लिए राजस्थान से दूसरा मोर्चा खोला जिससे भारत की जीत निश्चित कर दी थी। भूगोल प्रोफेसर पवन कुमार ने कहा कि इसी युद्ध के दौरान जब अमेरिका ने पाकिस्तान का पक्ष लेते शास्त्री को भारत में गेहूं की सप्लाई बंद करने की धमकी दी तो उन्होंने भारतीयों से सप्ताह में एक समय अनाज न खाने का प्रण लिया और इसकी शुरुआत सबसे पहले अपने घर से ही शुरू की। प्राचार्य डॉ. रणबीर सिंह आर्य ने अपने संदेश में कहा कि शास्त्री अपने आदर्शों पर खरे उतरने वाले सच्चे और ईमानदार देशभक्त थे। जब उनका देहांत हुआ तो उनके पास न जमीन-जायदाद, न बंगला और न ही कोई बैंक बैलेंस था परंतु उन्होंने अपनी सादगी और त्याग से एक नए और मजबूत भारत की नींव रख दी थी।

160. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 161st Birth Anniversary of great freedom fighter and revolutionary Bhikaji Rustam Kama on 04.10.2022 and delivered keynote address on "Bhikaji Kama: Iron Lady of India and Her Contribution in Freedom Struggle."

अमर उजाला, झज्जर 05.10.2022

भीकाजी कामा ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बुलंद की जंग-ए-आजादी की आवाज

बिरोहड़ कॉलेज में जयंती पर वीरांगना भीकाजी कामा को किया गया याद

संवाद न्यूज एजेंसी

सालहावास। आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोतर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. रणवीर सिंह आर्य की अध्यक्षता में कार्यक्रम हुआ। जिसमें महान स्वतंत्रता सेनानी भीकाजी रुस्तम कामा की 161 वीं जयंती के अवसर पर उन्हें याद किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डा. अमरदीप ने कहा कि भीकाजी कामा पहली भारतीय महिला थी जिन्होंने विदेश में भारतीय तिरंगा लहराकर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आजादी की आवाज बुलंद की थी। यह घटना 1907 के जर्मनी के शहर स्टुटगार्ट में इंटरनेशनल सोशलिस्ट कांग्रेस के आयोजन के दौरान की थी जिसमे दुनिया भर से एक हजार से ज्यादा लोग भाग ले रहे थे और सभी के झंडे लगे हुए थे परंतु भारत का कोई भी झंडा नहीं था। जिसे देखते ही भीकाजी कामा ने विरोध किया और स्वयं तिरंगा बनाया जिसमें हरे, पीले और लाल रंग की तीन पट्टियां थीं और बीच वाली पट्टी पर वंदे मातरम लिखा था।

भीकाजी कामा पर व्याख्यान देते डॉ. अमरदीप सिंह। संवाद

इस तिरंगा झंडे को लहराते हुए भीकाजी कामा ने साम्राज्यवाद को समूल नष्ट करने और भारत की आजादी के लिए संघर्ष करने के लिए सभी देशों का जोरदार आह्वान किया। ऐसी महान वीरांगना भीकाजी कामा का जन्म बंबई में 1861 को हुआ था। 1885 में उनकी शादी रूस्तमजी कामा से हुई जो एक उच्च शिक्षित व्यक्ति थे और पेशे से वकील थे।

1896 में बंबई में भयंकर प्लेग फैला और लोगों को संकट में देख भीकाजी खुद नर्स के रूप में सेवा देने लगीं और बाद में दुर्भाग्यवश वो खुद इसकी शिकार बन गईं और बाद में उन्हें बेहतर इलाज के लिए लंदन जाना पड़ा। इलाज के दौरान उन्होंने लंदन में महान सेनानी दादा भाई नौरोजी एवं श्यामजी कृष्ण वर्मा, लाला हरदयाल, वीडी सावरकर इत्यादि जैसे क्रांतिकारियों से मिलकर भारत की आजादी का बिगुल बजाना शुरू किया और युवाओं को भारत की आजादी के लिए आगे आने के लिए प्रेरित किया।

33 साल किया आजादी के लिए संघर्ष

महाविद्यालय की प्रशासनिक इंचार्ज डॉ. अनीता रानी ने कहा कि जीवन के 33 साल भीकाजी कामा ने यूरोप में भारत की आजादी के लिए संघर्षरत रहते हुए गुजारे। इस दौरान उन्होंने पेरिस इंडियन सोसाइटी बनाई एवं क्रांतिकारी मैगजीन वंदे मातरम भी निकाली। उनके राष्ट्रवादी विचारों और क्रांतिकारी गतिविधियों से भारत में क्रांतिकारियों को बहुत उत्साह मिला और भारतीय नारी का भी जुझारू स्वरुप सबके सामने आया। कार्यक्रम में प्रोफेसर पवन कुमार, जितेंद्र और अजय सिंह इत्यादि उपस्थित रहे।